



पश्चिम मध्य रेलवे
मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा सखिता



त्रैमासिक राजभाषा पत्रिका

वर्ष - 2025

अंक - 55



संपादक की कलम से

पश्चिम मध्य रेलवे, मुख्यालय, राजभाषा विभाग की गृहपत्रिका राजभाषा सरिता का नवीनतम 55 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा विभाग के निरंतर प्रयत्नों की झलक प्रस्तुत करती है। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी, जो हमारी राजभाषा है, केवल प्रशासन की भाषा नहीं, बल्कि जनसंपर्क और जनभावना की भाषा भी है।

आज के वर्तमान डिजिटल युग में राजभाषा हिंदी का प्रयोग न केवल आवश्यक है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता से भी जुड़ी हुई है। पश्चिम मध्य रेलवे की मुखिया एवं महाप्रबंधक महोदया श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय जी के नेतृत्व एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी महोदय के श्रेष्ठ मार्गदर्शन में निरंतर ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं, जिनसे प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग सुचारु रूप से बढ़ाया जा सके।

इस अंक में हमने विभिन्न विषयों पर लेख, पुस्तक समीक्षा, लघुकथाएँ, निबंध, व्यंग, गज़ल तथा कविताएँ आदि को संकलित कर विशेष रूप से समावेश किया है। हमें आशा है कि यह अंक आप सुधी पाठकों को प्रेरित करेगा कि आप अपने दैनिक सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और इसके संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

साथ ही इसमें पश्चिम मध्य रेलवे की विविध गतिविधियों की झलकियाँ को भी प्रकाशित किया गया है। हम अपने सभी सहयोगी रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और सुधी पाठकों से विनम्र अनुरोध करते हैं कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं व सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएँ। इससे रचनाकारों का मनोबल बढ़ेगा और पत्रिका को और बेहतर बनाने में हमें मदद मिलेगी।

(संतलाल मर्सकोले)
राजभाषा अधिकारी
मुख्यालय/जबलपुर

राजभाषा सरिता

वर्ष - 2025

अंक - 55

संरक्षक

श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय

महाप्रबंधक



मार्गदर्शक

एम.एस. हाशमी

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (नि.)



परामर्श

विवेक कुमार गुप्ता

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप मुख्य सिग. एवं दूर. इंजी. (टेली)



संपादक

संतलाल मर्सकोले

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



कार्यकारी संपादक

राकेश कुमार मालवीय

वरिष्ठ अनुवादक



सहयोग

राजभाषा विभाग



पत्राचार का पता

संपादक

राजभाषा सरिता

महाप्रबंधक कार्यालय, राजभाषा विभाग
पश्चिम मध्य रेलवे, इंदिरा मार्केट
जबलपुर (म.प्र.)-482 001
मोबाइल : 97524 15614, 77010 82680
e-mail: rajbhashawcrhq@gmail.com

- सीमित संख्या में निःशुल्क वितरण के लिए
- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्ति विचार लेखकों के अपने हैं।

अनुक्रमणिका

क्रं.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	रेल संचालन एवं प्रबंधन (पुरस्कृत निबंध)	01
2.	सलीखा -ए-मोहब्बत (गज़ल), है रूह के तेवर जोगन (गज़ल)	04
3.	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य का योगदान (निबंध)	05
4.	ऐसा है हमारा किसान (कविता)	08
5.	सेवा के पथ पर चलती है, हमारी रेल (कविता)	08
6.	प्रेम की वेदी (नाट्य समीक्षा)	09
7.	आई हिंदी ऋतु आई (व्यंग्य)	11
8.	भ्रष्टाचार (कविता)	12
9.	सभी को खबर हो गई (कविता)	12
10.	दीवाल दिवाली और दिवाला के बीच अंतरसंबंध (लेख)	13
11.	राजभाषा हिंदी को अपनायें हम (कविता)	14
12.	ए आई और हिंदी... (व्यंग्य)	15
13.	रंग जीवन के (कविता)	16
14.	आवेदन पत्र (लेख)	17
15.	एच.आर.एम.एस. की उपयोगिता (लेख)	19
16.	ऑपरेशन सिंदूर और उसके वैश्विक प्रभाव (लेख)	21
17.	रिशतों की एक नई कहानी (लेख)	23
18.	माँ (कविता)	24
19.	लघु कथाएँ (कहानी)	25
20.	एक रेल कर्मचारी का दर्द (कविता)	28
21.	छोटी सी गुड़िया (कविता)	28
22.	रेल प्रबंधन : थल से जल के अंदर तक (पुरस्कृत निबंध)	29
23.	दीवाली (कविता)	33
24.	बाल कविता दीवाली (कविता)	33
25.	हल्दीघाटी (कविता)	34
26.	नर्मदा की गोद में - जबलपुर का गीत (गीत)	35
27.	सेवानिवृत्ति (कविता)	36
28.	छायाचित्र वीथिका	37

मुख्य पृष्ठ

क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव - 2025 में प्रथम स्थान प्राप्त नाटक 'सखी सुहाग राम मोहे दिन्हा' को विजेता ट्रॉफी प्रदान करती हुई, श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे

गौरव के पल



श्री नीरज दुबे, सेवा निवृत्त उप मुख्य इंजी./ नि./योजना, पमरे को रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत प्रथम पुरस्कार (राजपत्रित वर्ग) से सम्मानित करते हुए श्री सतीश कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय)



श्री संजीव तिवारी, मु. संकेत एवं दूर संचार इंजी. पमरे को रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता वर्ष 2024-25 के अन्तर्गत द्वितीय पुरस्कार (राजपत्रित वर्ग) से सम्मानित करते हुए श्री सतीश कुमार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड (रेल मंत्रालय)

निबंध

रेल संचालन एवं प्रबंधन
रेलवे बोर्ड स्तर पर पुरस्कृत प्रथम निबंध

भारतीय रेल, संचालन के आरम्भ से आज तक 171 वर्ष की लम्बी अवधि में देश में होने वाले राजनैतिक, सामाजिक, भौगोलिक, तकनीकी एवं व्यवसायिक क्षेत्रों के अनेक परिवर्तनों से निरंतर प्रभावित होती रही है। भारतीय रेल ने अपने उत्तरोत्तर विकास के साथ-साथ सम्पूर्ण देश के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है। कश्मीर से कन्याकुमारी एवं गुजरात से बंगाल, सुदूर उत्तर पूर्व के राज्यों को जोड़ने में भारतीय रेल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। माल एवं यात्री परिवहन, सामाजिक – सांस्कृतिक एकता, देश की सीमाओं की सुरक्षा, ऊर्जा उत्पादन, उद्योग-धंधे, व्यापार, अधोसंरचना-निर्माण आदि, सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में किये जाने वाले कार्यों के लिये भारतीय रेल का उल्लेखनीय योगदान सदैव बना रहा है। यह यात्री एवं माल यातायात दोनों के लिये सबसे सस्ता, सुरक्षित एवं सुविधाजनक माध्यम है। इसी कारण भारतीय रेल को देश की जीवन रेखा कहा जाता है।

भारतीय रेल, पूर्ण रूप से भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत, भारत एवं विश्व का सबसे बड़ा शासकीय संस्थान है। इसमें अनेक विभाग हैं, जिनका जमीनी स्तर से लेकर रेलवे बोर्ड तक एक पृथक प्रशासकीय ढांचा है। इन सभी विभागों के सामंजस्य एवं समन्वय के फलस्वरूप रेल संचालन का कार्य होता है। प्रत्येक विभाग की अपनी निश्चित कार्य प्रणाली है। समय – समय पर नवीन तकनीकी अनुसंधानों, जमीनी स्तर पर आने वाली कठिनाइयों, पूर्व अनुभवों के आधार पर चिन्हित प्रणालीगत त्रुटियों को दृष्टिगत रखते हुए, प्रत्येक विभाग अपनी कार्य प्रणाली में निरंतर सुधार का प्रयास करता है। यह एक सतत् प्रक्रिया है, जो रेल संचालन एवं प्रबंधन को नित नई दिशा प्रदान करती है।

हमारे देश में रेल संचालन एवं प्रबंधन पर विभिन्न प्रशासकीय स्तरों पर अलग-अलग समय में अनेक प्रकार के अध्ययन, विश्लेषण एवं सुधारात्मक उपायों के माध्यम से प्रयास किये जाते रहे हैं। अनेक प्रयास सफल भी रहे हैं, तो कुछ असफल भी रहे हैं। अनेक क्षेत्रों में प्रणालीगत सुधारों की संभावनाएं आज भी विद्यमान हैं। एक बड़े संस्थान में अत्यधिक प्रयोगवाद के दूरगामी परिणाम बड़े स्तर पर हानिकारक भी हो सकते हैं, अतः किसी भी नये प्रयोग के पूर्व विशेष विचार मंथन की आवश्यकता है।

भारतीय रेल के अनवरत विकास के लिये, आय के संसाधनों में वृद्धि करने एवं व्यय पर उचित नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। यद्यपि प्रारम्भ से ही यह जन कल्याण के

दृष्टिकोण से स्थापित भारत सरकार का एक संस्थान है, तथापि इसके आर्थिक स्थायित्व एवं विकास हेतु आय के साधनों को विस्तारित करने के लिये हर सम्भव प्रयास किये जाते रहे हैं। वित्तीय व्यवहार्यता की दृष्टि से भी आय-व्यय का संतुलन रखना आवश्यक है, अन्यथा कोई भी संस्थान समुचित वित्तीय प्रबंधन के अभाव में कमजोर स्थिति को प्राप्त हो सकता है। भारत सरकार का एक उन्नत उपक्रम “भारत संचार निगम मर्यादित” इसका ज्वलंत उदाहरण है।

लेखक द्वारा उसकी रेल सेवा में विभिन्न स्तरों पर कार्य करते हुए किये गए अनुभवों के आधार पर, कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं:-

1. भारतीय रेल प्रतिदिन भारी मात्रा में यात्रियों एवं माल का परिवहन करती है, अतः समानान्तर रूप से होने वाली अनेक ऐसी गतिविधियाँ हैं, जो उक्त परिवहन के कारण साथ-साथ आवश्यक रूप से चलती हैं एवं उनको उपयुक्त इलेक्ट्रॉनिक माध्यम द्वारा संबद्ध करने पर, उपभोक्ता सुविधा एवं रेल राजस्व दोनों में समान रूप से पर्याप्त वृद्धि संभव है।
2. माल परिवहन के लिये उपभोक्ताओं को द्वार से द्वार तक की सेवा देने के लिये, उद्गम स्थान से सड़क मार्ग द्वारा माल की ढुलाई करते हुए माल गाड़ियों में लदान करने एवं गन्तव्य स्थान पर पुनः माल को उतार कर सड़क मार्ग से निर्धारित स्थल तक पहुँचाने के लिये निजी संस्थाओं के साथ रेलवे अनुबंध कर सकती है, जिससे उन्हें पर्याप्त मात्रा में व्यवसाय व आर्थिक लाभ होगा तथा व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण वे अपेक्षाकृत सस्ती दरों पर यह कार्य कर सकेंगे। यह संयुक्त एवं एकीकृत परिवहन प्रणाली, संपूर्ण देश के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती है।
3. इसी प्रकार रेल यात्री परिवहन, सड़क परिवहन एवं पर्यटन को इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से संयुक्त एवं संबद्ध करते हुए एक बहुआयामी प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो यात्री सुविधा में विस्तार के साथ सभी संबंधित विभागों एवं यात्रियों को एक साथ आर्थिक लाभ पहुँचा सकती है। रेल यात्रियों की पर्याप्त संख्या, सभी विभागों/संस्थानों के लिये एक अच्छा व्यवसायिक अवसर प्रदान करती है।
4. भारत के विभिन्न शहरों में प्रतिदिन लाखों रेलयात्रियों को ठहरने के लिये इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अग्रिम आरक्षण द्वारा उचित दरों पर होटल, अतिथि गृह, इत्यादि की व्यवस्था हेतु रेलवे द्वारा निजी संस्थाओं से अनुबंध किये जा सकते हैं, जिससे निजी संस्थाओं को पर्याप्त मात्रा में नियमित रूप से व्यवसाय एवं

आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है तथा वे प्रतिस्पर्धा के कारण रेल यात्रियों को उपयुक्त दरों पर सुविधायें उपलब्ध करा सकते हैं।

5. भारतीय रेल की खान-पान व्यवस्था, एक लम्बे समय से आलोचना का विषय रही है। इसे सुधारने के लिये अनेक प्रयोग किये गये, किन्तु अभी भी भोजन व्यवस्था का स्तर, यात्रियों की अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो सका है। यदि रेलवे प्रत्येक महत्वपूर्ण स्टेशन पर, रेल यात्रियों के लिये एक मानक स्तर के भोजन की व्यवस्था हेतु संबंधित शहर की निजी संस्थाओं से मदवार निर्धारित दरों पर अनुबंध करे एवं प्रत्येक यात्री को यात्रा का अग्रिम आरक्षण कराते समय, उनमें से किसी एक संस्था का विकल्प चुनने का अवसर प्रदान करें तथा आरक्षण के साथ ही यात्री को निर्धारित स्टेशन पर, उसकी सीट पर वांछित भोजन उपलब्ध हो सके, तो सम्पूर्ण खान-पान व्यवस्था के स्तर में आशातीत सुधार सम्भव है। ऐसा करने पर एक ओर निजी संस्थाओं में व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा होने से सेवाओं का स्तर सुधरेगा, तो दूसरी ओर यात्रियों को चुनाव के लिये उचित दरों पर पर्याप्त विकल्प उपलब्ध होंगे। इसके साथ ही भारतीय रेल, बिना किसी विशेष संसाधन का उपयोग किये, यात्रियों को उचित दर पर वांछित सुविधा प्रदान करने हेतु, उपयुक्त शुल्क प्राप्त कर सकती है।

क्रमांक 1 से 5 तक वर्णित सभी कार्यों में विशेष संसाधन जुटाने की आवश्यकता नहीं है, केवल इलेक्ट्रॉनिक माध्यम द्वारा उक्त सेवाओं को संबद्ध करना होगा, जिससे उचित दरों पर उपभोक्ता सुविधा एवं सर्व-संबंधित के व्यवसायिक एवं आर्थिक हित में वृद्धि होगी।

6. भारतीय रेल-भूमि के व्यवसायिक उपयोग के प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु निजी संस्थाएं अतिरिक्त लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से लम्बी अवधि के अनुबंध चाहती हैं, जिससे कालांतर में भारतीय रेल को अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा। अतः इस संबंध में विशेष विचार मंथन करते हुए, दीर्घकालीन नीति निर्धारण की आवश्यकता है। आय के संसाधनों में वृद्धि के साथ व्यय-नियंत्रण भी भारतीय रेल के व्यवसायिक हित में है, जिसके लिये आवश्यक, कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं:-

1. एक लम्बे समय से भारतीय रेल पर 160 कि.मी. प्रतिघंटे एवं अधिक गति से रेलगाड़ी संचालन के प्रयास किये जा रहे हैं। इसके लिये विद्यमान रेलपथ, संकेत एवं विद्युत प्रणाली में आवश्यक तकनीकी सुधारों के लिये विपुल मात्रा में धनराशि का व्यय किया जा रहा है। इस कार्य से भविष्य में निम्नलिखित समस्याएं सम्भावित हैं:-

(अ) एक ही रेलपथ पर तीव्र गति से चलने वाली यात्री गाड़ियों एवं मालगाड़ियों के लगातार संचालन से संरक्षा के लिए खतरा हो सकता है, क्योंकि वजनदार मालगाड़ियों के चलने से रेलपथ के अवयवों में खराबी आने लगती है, जिससे रेलपथ पर तीव्रगामी गाड़ियों के लिए आवश्यक मानकों को लगातार बनाये रखना, धीरे-धीरे कठिन होता जाता है एवं इसी कारण रेल दुर्घटनाओं की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

(ब) मिश्रित यातायात में विविध गतियों से चलने वाली रेलगाड़ियों (160 से 75 कि.मी. प्रतिघंटे) के कारण, तीव्रगामी गाड़ियों को सही समय पर पहुँचाने के लिये धीमी गाड़ियों को अलग-अलग स्टेशनों पर रोका जाता है, परिणाम स्वरूप अनेक गाड़ियाँ अपने निर्धारित समय से विलम्ब से चलने लगती हैं और गाड़ियों की समयबद्धता का ह्रास होने लगता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि, 160 कि.मी. प्रतिघंटे एवं अधिक गति से रेलगाड़ी संचालन, संरक्षा एवं समयबद्धता दोनों दृष्टियों से उपयुक्त नहीं हैं। अतः उक्त योजना पर और अधिक धनराशि का व्यय करने के पूर्व पुनर्विचार आवश्यक है। वर्तमान रेलपथ पर मिश्रित यातायात के लिये, 130 कि.मी. प्रतिघंटे की अधिकतम गतिसीमा से रेल संचालन उपयुक्त व सुरक्षित है एवं इससे अधिक गति की गाड़ियों के लिये अलग से नये रेलपथों का निर्माण किया जाना चाहिए।

2. रेल अधोसंरचना के विकास के लिये, नयी रेल लाइनों, नवीन भवनों एवं अन्य निर्माण कार्यों में भारी मात्रा में धनराशि का व्यय किया जा रहा है, किन्तु रेलवे की पुरानी सम्पत्तियों के अनुरक्षण हेतु पर्याप्त धनराशि के प्रावधान नहीं होने पर, भविष्य में रेल संपत्तियों के प्रबंधन में अनेक समस्याएं हो सकती हैं। अनुरक्षण कार्यों में होने वाले व्यय पर नियंत्रण रखने के लिये, सॉफ्टवेयर द्वारा प्रत्येक रेल सम्पत्ति का इतिहास एवं उस पर होने वाले व्यय का विवरण रखकर, अनावश्यक व्यय से बचा जा सकता है।

3. विगत लगभग 20 वर्षों के दौरान नये तकनीकी आविष्कार, द्रुत गति से विकास एवं परिवर्तन हो रहे हैं, जो उपयोगी भी हैं, किन्तु किसी एक तकनीक के आधार पर बने उपकरणों, यंत्रों अथवा सामग्री को उसकी निर्धारित आयु सीमा पूर्ण किये बिना, उसके स्थान पर नयी तकनीक के आधार पर विकसित वस्तुओं को प्रयोग में लाने से अनावश्यक आर्थिक हानि होती है। उपयुक्त योजना बना कर इस अपव्यय से बचा जा सकता है। रेलवे के सभी विभागों को इस दिशा में प्रयास करते हुए, उचित दिशानिर्देश जारी करना आवश्यक है। इसके

अतिरिक्त, किसी भी नयी तकनीक, उपकरण अथवा सामग्री को बड़े स्तर पर प्रयोग में लाने के पूर्व, उसे भली-भांति जाँचना, परखना आवश्यक है, ताकि भविष्य में अनावश्यक अपव्यय से बचा जा सके।

4. निर्माण कार्यों में तेजी लाने के लिये विशेष प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु कार्यों की गुणवत्ता नियंत्रण अपेक्षानुरूप नहीं हैं, जिससे भविष्य में अपव्यय एवं अन्य समस्याजनक रेल सम्पत्तियों का सृजन संभव है। अतः कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिये विशेष उपाय एवं प्रयास किये जाने की आवश्यकता है। गुणवत्ता नियंत्रण के लिये सर्वाधिक आवश्यकता प्रशिक्षित, दक्ष एवं अनुभवी रेल पर्यवेक्षकों की है। निजी संस्थाओं के माध्यम से रेलवे की महत्वपूर्ण परियोजनाओं का पर्यवेक्षण कार्य अपेक्षित स्तर एवं प्रभावी ढंग से नहीं किया जा सकता। अस्थायी रूप से नियुक्त होने के कारण उनकी निष्ठा एवं समर्पण, भारतीय रेल पर आजीवन कार्य करने वाले पर्यवेक्षकों के समान नहीं हो सकती।

5. वर्तमान में कार्यों की योजना, क्रियान्वयन एवं गुणवत्ता नियंत्रण एक ही विभागीय कर्मचारी व अधिकारी दल द्वारा किया जा रहा है, इस कारण दोषान्वेषण की प्रक्रिया प्रभावी नहीं है। अतः योजना, क्रियान्वयन एवं गुणवत्ता नियंत्रण भिन्न-भिन्न विभागीय दलों द्वारा करने पर प्रणाली अधिक सुदृढ़ होगी।

6. भारतीय रेल की विभिन्न क्षेत्रीय रेलों, मंडलों, विभागों एवं निर्माण तथा उत्पादन इकाइयों में कुछ-न-कुछ अभिनव एवं प्रभावकारी प्रयोग/प्रणाली विकसित किये जाते रहे हैं, इनकी समीक्षा करते हुए, शेष सभी संस्थानों में समान रूप से इनका क्रियान्वयन करवाना उपयोगी सिद्ध होगा। इस कार्य के लिये रेलवे बोर्ड स्तर पर समन्वय एवं विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। इससे कार्य क्षमता में वृद्धि और अपव्यय पर नियंत्रण संभव है। आय-व्यय संबंधी उक्त सुझावों के अतिरिक्त, भारतीय रेल पर नीति निर्धारण, अनुपालन, संरक्षा, मानव संसाधन विकास एवं प्रबंधन से संबंधित कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं:-

1. पूर्व अनुभवानुसार, भारतीय रेल के विभिन्न विभागों में नियमित रूप से जारी होने वाले नीति-निर्देशों तथा इनमें होने वाले परिवर्तनों की आवृत्ति की संख्या अधिक है, जिसके परिणाम स्वरूप जमीनी स्तर पर काम करने वाले कर्मचारियों एवं पर्यवेक्षकों को अनेक बार संदेह एवं भ्रम का सामना करना पड़ता है, जो अंततः कार्यों में व्यवधानकारक है।

अतः निर्देशों को जारी करने के पूर्व पर्याप्त विचार मंथन

एवं सावधानी आवश्यक है। साथ ही प्रत्येक तिमाही में निर्धारित एक विशेष दिनांक पर निर्देशों/परिवर्तनों/संशोधनों को जारी करना चाहिए, ताकि सर्व संबंधित को इसकी सूचना समानरूप से मिल सके। ऐसा करने से निर्देशों का क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से हो सकेगा।

2. निःसंदेह, भारतीय रेल में अलग-अलग विभागों एवं कार्य क्षेत्रों में सुरक्षित, संरक्षित एवं व्यवस्थित तरीकों से कार्य करने के लिये नियमावली, संहितायें एवं परिपत्र जारी किये गये हैं तथा निरंतर रूप से पत्रों द्वारा निर्देश भी जारी किये जाते हैं, किन्तु इन के जमीनी स्तर पर इन सबका परिपालन सुनिश्चित करने के लिये एक प्रभावकारी माध्यम एवं निगरानी की प्रणाली की विशेष आवश्यकता है। इस पर विचार कर उपयुक्त उपाय किये जाने चाहिए।

3. भारतीय रेल पर संरक्षा को सर्वोपरि माना गया है। वर्तमान में संरक्षा संबंधी समस्याएँ बढ़ती हुई प्रतीत हो रही हैं। संरक्षा से संबंधित सभी विभागों में प्रशिक्षित, दक्ष एवं अनुभवी पर्यवेक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। पिछले कुछ वर्षों में हो रही लगातार सेवानिवृत्तियों के कारण ऐसे पर्यवेक्षकों में कमी आयी है, अतः नयी भर्ती एवं प्रभावी प्रशिक्षण द्वारा इसे शीघ्र पूर्ण करना आवश्यक है।

4. भारतीय रेल पर लगभग 12 लाख कर्मचारी एवं अधिकारी कार्यरत हैं, अतः मानव संसाधन प्रबंधन एवं विकास, हमारे संगठन के लिये एक अत्यावश्यक एवं महत्वपूर्ण तत्व है। समर्पित एवं कर्ताव्यनिष्ठ कर्मचारी/अधिकारी संगठन के विकास में अभूतपूर्व योगदान देते रहे हैं। कोई भी व्यक्ति संगठन के लिये पूर्ण निष्ठावान एवं समर्पित तभी हो सकता है, जब उसकी आजीविका के दौरान एवं सेवानिवृत्ति के उपरांत, उसे सुरक्षित आर्थिक भविष्य का विश्वास हो। रेलवे में कार्यरत जो अधिकारी व कर्मचारी अपने सुरक्षित आर्थिक भविष्य के प्रति आश्वस्त हैं, उनका समर्पण भाव अपेक्षाकृत अधिक है। भारतीय रेल के कर्मचारियों/अधिकारियों की यह विशेषता, अन्य विभागों में सुलभ नहीं है।

5. विगत 30 से 40 वर्षों के दौरान कार्यरत रेल कर्मचारियों एवं अधिकारियों में अनेक प्रतिभाशाली व्यक्ति रहे हैं, जिन्होंने किसी विशेष रेल-क्षेत्र में लम्बे समय तक कार्य करते हुए, विशेषज्ञता प्राप्त की है। ऐसे व्यक्ति या तो सेवा निवृत्त हो चुके हैं अथवा होने वाले हैं। इन व्यक्तियों के ज्ञान एवं अनुभव का लाभ उठाने के उद्देश्य से रेलवे बोर्ड स्तर पर ऐसे विशेषज्ञों को चिन्हित करते हुए, एक विशेष समिति का गठन करके उनके सुझावों पर

गज़ल

सलीखा - ए - मोहब्बत

विशेष चर्चा, विचार मंथन एवं समीक्षा करते हुए, प्रणाली सुधार के उपाय किये जा सकते हैं। यह कार्य भारतीय रेल के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

6. विगत वर्षों में भारतीय रेल से लगातार हो रही सेवानिवृत्तियों के कारण अनुभवी कर्मचारियों/अधिकारियों की कमी स्पष्ट रूप से महसूस की जा सकती है। इसी कारण, सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों का पुनर्नियोजन करने के आदेश जारी किये गये हैं, किन्तु यह एक अस्थायी व्यवस्था है। स्थायी समाधान हेतु, कम-से-कम सभी पर्यवेक्षकों एवं अधिकारियों के रिक्त पद भरते हुए उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण देना लाभप्रद होगा।

7. भारतीय रेल में प्रत्येक स्तर पर रेल सेवकों का गहन एवं प्रभावी प्रशिक्षण अत्यावश्यक है। जिस प्रकार भारतीय सेना में नयी भर्ती द्वारा नियुक्त सैनिकों एवं अधिकारियों को प्रशिक्षण के दौरान ही वीरता और देशभक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत कर दिया जाता है, उसी प्रकार भारतीय रेल में भी प्रशिक्षण का स्तर उपलब्ध कराना चाहिए। यह कार्य क्रमशः एवं नियमित रूप से करने पर कालांतर में विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

8. विगत वर्षों में नियमों में परिवर्तन द्वारा “भारतीय रेल प्रबंधन सेवा” का गठन किया गया है, किन्तु अभी तक इसे आशानुरूप सफलता नहीं मिल सकी है। अतः इसमें संशोधन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। यदि प्रारंभिक भर्ती के नियमों को पूर्व की भांति विभागवार यथावत रखा जाये एवं वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड के स्तर पर अधिकारियों की स्वेच्छानुसार उन्हें “भारतीय रेल प्रबंधन सेवा” में सम्मिलित किया जाये तो यह अधिक कारगर हो सकता है। प्रत्येक विभाग में विशेषज्ञता के लिये न्यूनतम 15-20 वर्षों की रेल-सेवा होनी चाहिए, जो रेल संचालन एवं प्रबंधन के लिये अत्यावश्यक है। जो अधिकारी प्रबंधन सेवा में इच्छुक नहीं हैं, वे अपने विभाग में ही उच्चतम पदोन्नति पा सकते हैं।

आशा है, उपर्युक्त सुझाव रेल संचालन एवं प्रबंधन के लिये उपयोगी सिद्ध होंगे एवं भारतीय रेल भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति कर सकेगी।

नीरज दुबे

सेवानिवृत्त उप मुख्य इंजी./नि./योजना
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर



मोहब्बतों में इतना सलीका तो रखा जाये,
रुखसती में सिर्फ हाथ ना हिलाया जाये...

जज्बात जाहिर ना करना हो तो ना करो,
कम से कम हाल तो पूछ लिया जाये...

कबतूर, डाकिया, व्हाट्सअप और ना जाने कितने जरिये हैं,
किसी को तो काम पर लगा दिया जाये...

इस कदर बेकद्री, बेरुखी, बेपरवाही क्या बेवफाई है ये
कहीं सचमुच ये ही ना समझ लिया जाये....

तुम्हारे लौटने की तारीख तो अदालत की तारीखों जैसी है..
कहीं ये ना हो कि पूरा मामला ही अदालत में चला जाये...

इन इंतजार के अधेड़ों में, शमा कोई और भी रोशन हो सकती है.
वक्त-गुजारी से बेहतर है कि,

‘सहर’ का इशारा समझ लिया जाये....

विवेक कुमार गुप्ता “सहर”

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं

उप मु.सिग. एवं दूर सं. इंजी.

पश्चिम मध्य रेलवे



है रूह के तेवर जोगन होने वाले
तुम ख्वाब न देखो दुल्हन होने वाले
बेकार जलाते हो दिल को तुम अपने
जलकर किसी से नहीं रौशन होने वाले
ये चाँद सा चेहरा देखना फिर पानी में
शीशे जो गिरे नहीं दर्पण होने वाले
टेढ़े ही सही ले जायेंगे मंजिल तक
रास्ते ये मेरे नहीं आँगन होने वाले
खूबी है यहाँ हर एक मौसम की अपनी
मौसम सभी ये नहीं सावन होने वाले
फैयाज मैं चल पड़ा हूँ ऐसे रास्ते पर
गेसू किसी के नहीं उलझन होने वाले

गज़ल

राकेश शर्मा

सीनियर सेक्शन इंजीनियर
रानी कमलापति रेलवे स्टेशन,
भोपाल मंडल, पमरे



निबंध

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी साहित्य का योगदान

प्रस्तावना- स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जोश भरा। आजादी की पूर्व पीठिका तैयार करने वाले हिंदी साहित्यकारों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मैथिलीशरण गुप्त, प्रताप नारायण मिश्र, जयशंकर प्रसाद अनेक महत्वपूर्ण नाम हैं। भारत का स्वाधीनता आंदोलन केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, सामाजिक और वैचारिक क्रांति भी थी। इस आंदोलन में हिंदी साहित्य ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साहित्यकारों की लेखनी ने जनमानस को जागृत करने, राष्ट्रवाद की भावना को प्रबल करने और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष हेतु वैचारिक बल प्रदान करने का कार्य किया। हिंदी साहित्य ने न केवल अंग्रेजी शासन की क्रूरता की आलोचना की, बल्कि भारतीय संस्कृति, गौरव और आत्मसम्मान को पुनर्जीवित करने का प्रयास भी किया। साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, दीपक भी होता है। स्वाधीनता आंदोलन के समय के साहित्य पर यह उक्ति अच्छी तरह चरितार्थ हुई थी। सदियों की परतंत्रता और अंग्रेजी शासन की क्रूरता से कराहती भारतीय जनता में जागृति का संचार साहित्यकारों ने ही किया था, जिसके लिए कविवर नेपाली ने लिखा है—“हम धरती क्या, आकाश बदलने वाले हैं। हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले हैं।”

हिंदी साहित्य: जनजागरण का माध्यम- स्वतंत्रता आंदोलन के आरंभिक चरण में ही हिंदी साहित्य ने जनजागरण का कार्य किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है। उन्होंने भारत दुर्दशा और अंधेरी नगरी जैसी रचनाओं

के माध्यम से क्रूर अंग्रेजी शासन की विडंबनाओं तथा सामाजिक पतन को उजागर किया। उनकी रचनाएँ सामाजिक चेतना को जगाने वाली थीं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अपनी ‘भारत दुर्दशा’ कविता में “हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।” कहकर देश में व्याप्त हर तरफ, हर तरह की दुर्दशा का चित्रण किया तो अपने सुप्रसिद्ध नाटक ‘अंधेरी नगरी’ में दुर्दशा के कारणों को चिह्नित भी किया।

मैथिलीशरण गुप्त की भारत भारती ने राष्ट्रीयता की भावना को जन-जन तक पहुँचाया। उनकी प्रसिद्ध पंक्ति ‘जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं नरपशु निरा और मृतक समान है।’ ने युवाओं को आत्मगौरव और देशभक्ति के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हम में राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार करने का विवेक भी जगाया—“हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी। आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी।” यह कहकर हमें विचार करने के लिए इकट्ठा किया। उन्होंने “है कार्य ऐसा कौन सा साधे न जिसको एकता” यह कहकर हमें संगठित होने की भी सीख दी। ध्यातव्य है कि स्वाधीनता का प्रथम आंदोलन 1857 में संगठन के अभाव में ही विफल हुआ था। गुप्त जी ने हमारे गौरवशाली अतीत का स्मरण कराते हुए वर्तमान की दुर्व्यवस्था का चित्रण भी किया। उन्होंने हमारा मनोबल बढ़ाते हुए कहा—“आए नहीं थे स्वप्न में भी जो किसी के ध्यान में। वे प्रश्न पहले हल हुए थे एक हिंदुस्तान में।”

साहित्यिकारों की क्रांतिकारी लेखनी- स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अनेक साहित्यिकारों ने अपनी लेखनी से क्रांति की भावना को जन-जन तक पहुँचाया। माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, जय शंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, राष्ट्रकवि दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, श्यामलाल गुप्त प्रभृति ने अपनी-अपनी शैली में ओजपूर्ण रचनाएँ कीं, जिनसे उत्प्रेरित-उद्वेलित तत्कालीन युवावर्ग



अंग्रेजी शासन से दो-दो हाथ करने को व्याकुल हो उठा। सुभद्रा कुमारी चौहान की झाँसी की रानी कविता ने वीरता और विद्रोह की भावना को उजागर किया। उनकी पंक्ति 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' – आज भी देशभक्तिका प्रतीक मानी जाती है। उन्होंने अपनी कविता 'वीरों का कैसा हो बसंत' के प्रश्नोत्तर के बहाने से नौजवानों को स्वाधीनता संग्राम के लिए सन्नद्ध किया।

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' जैसी रचनाओं से देश की महिमा का गान किया और जनसाधारण को देशभक्ति से ओत-प्रोत किया। उनकी रचनाएँ ऐतिहासिक गौरव और सांस्कृतिक चेतना से ओत प्रोत थीं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'रश्मि' और 'हिम्मत' करने वालों कि हार नहीं होती' जैसी कविताएँ युवाओं को संघर्ष के लिए प्रेरित करती रहीं। दिनकर की ओजपूर्ण भाषा ने आंदोलन को वैचारिक बल प्रदान किया। निराला ने "जागो फिर एक बार। शेरों की माँद में घुस आया है आज स्यार।" कहकर मानो अंग्रेजी शासन के खिलाफ जनजागरण का शंख फूँक दिया। माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' बलिदान का एक ज्वलंत प्रतीक बनी तो 'कैदी और कोकिला' कविता में उन्होंने दुर्दमनीय अंग्रेजी शासन की काली करतूतों की पोल खोली तथा "द्वार बलि का खोल, चल भूडोल कर दें।/एक हिमगिरी एक सिर का मोल कर दें।/मसलकर अपने इरादों-सी उठाकर।/दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें।/रक्त है या है नसों में क्षुद्र पानी। जाँच कर तू शीश दे अपनी जवानी।" कहकर उन्होंने जवानों में जोश भर दिया।

बालकृष्ण शर्मा नवीन ने 'विप्लव गान' में लिखा "कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए। एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए। नाश! नाश! हा महानाश! की प्रलयकारी दग खुल जाए।" कहकर महानाश का आह्वान किया। गोपाल दास नीरज ने लिखा, "देखना है जुलूम की रफ्तार बढ़ती है कहाँ तक? देखना है बम की बौछार होती है कहाँ तक?" कहकर अंग्रेजी सरकार को कड़ी चुनौती दी तथा स्वतंत्रता सेनानियों को लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय चेतना के प्रखर कवि और अमर गीतकार 'वन मैन आर्मी' की उपाधि से सम्मानित गोपाल सिंह नेपाली ने भी 'शासन चलता तलवार से' लिखकर जवानों को तलवार उठाने हेतु पुकार लगाई। साथ ही, देश के अहिंसा के समर्थकों की

खबर लेते हुए उन्होंने कहा, "चरखा चलता है हाथों से। शासन चलता तलवार से।" क्योंकि, सदियों की गुलामी की जकड़न का अंत सहज ही सम्भव नहीं था। "जंजीर टूटती न कभी अश्रुधार से।" इसलिए, युद्ध आवश्यक था। फलतः, उसकी जोर-शोर से तैयारी भी अत्यावश्यक थी।

इन सबके अलावा बंकिमचंद्र चटर्जी के देश प्रेम से ओत-प्रोत गीत 'वंदे मातरम्' ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया। अब किसी कीमत पर देश के लोगों को पराधीनता स्वीकार नहीं थी।

'वंदे मातरम्!'

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां

शस्यश्यामलां मातरम्! वंदे मातरम्!

एक ओर बंकिमचंद्र चटर्जी ने आनंद मठ व वंदे मातरम् जैसी कालजयी रचनाओं का सृजन किया, तो कविवर जयशंकर प्रसाद की कलम भी बोल उठी-

'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।'

उपन्यास और नाटक: सामाजिक चेतना का विस्तार -

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेमचंदजी का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा। उन्होंने गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि जैसे उपन्यासों में किसानों, मजदूरों और आम जनता की पीड़ा को उजागर किया। उनकी रचनाएँ गांधीजी के विचारों से प्रभावित थीं और अहिंसक आंदोलन को वैचारिक समर्थन देती थीं। कर्मभूमि में उन्होंने सत्याग्रह और सामाजिक सुधार की भावना को साहित्यिक रूप दिया। प्रेमचंद ने जन-जागरण का एक ऐसा अलख जगाया कि जनता हुंकार उठी। सरफरोशी का जज्बा जगाती प्रेमचंद की बहुत सारी रचनाओं को अंग्रेजी शासन के रोष का शिकार होना पड़ा। न जाने कितनी रचनाओं पर रोक लगा दी गई और उन्हें जब्त कर लिया गया। कई रचनाओं को जला दिया गया, परंतु इन सब बातों की परवाह न करते हुए वे अनवरत लिखते रहे। उन पर कई तरह के दबाव भी डाले गए और नवाब राय की स्वीकृति पर उन्हें डराया-धमकाया भी गया। लेकिन इन कोशिशों व दमनकारी नीतियों के आगे प्रेमचंद ने कभी हथियार नहीं डाले। उनकी रचना 'सोजे वतन' पर अंग्रेज अफसरों ने कड़ी आपत्ति जताई और उन्हें अंग्रेजी खुफिया विभाग ने पूछताछ के लिए तलब किया। अंग्रेजी शासन का

खुफिया विभाग अंत तक उनके पीछे लगा रहा। परंतु प्रेमचंद की लेखनी रुकी नहीं, बल्कि और प्रखर होकर स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का काम करती रही। उन्होंने लिखा:-

‘मैं विद्रोही हूँ जग में विद्रोह कराने आया हूँ, क्रांति-क्रांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूँ।’

वहीं जयशंकर प्रसाद ने चंद्रगुप्त और स्कंदगुप्त जैसे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नाटकों के माध्यम से भारतीय इतिहास की महानता को दर्शाया। इन नाटकों ने भारतीय गौरव को पुनर्जीवित किया और युवाओं को राष्ट्रभक्ति की ओर प्रेरित किया। ‘भारत दुर्दशा’ जैसे नाटकों ने तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक दुर्दशा को उजागर किया और लोगों को अपनी स्थिति पर सोचने को मजबूर किया।

ओजपूर्ण कविताएं: जोश और बलिदान का संदेश - सोहनलाल द्विवेदी ने लिखा-‘जहाँ हो बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।’ यह पंक्तिबलिदान और स्वतंत्रता के लिए आत्मोत्सर्ग का संदेश देती है। श्याम नारायण पाण्डेय ने हल्दीघाटी में चेतक के माध्यम से वीरता का चित्रण किया। उनकी कविता की पंक्ति-‘रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था’-वीरता और आत्मबलिदान का प्रतीक बन गई।

हिंदी पत्रकारिता : वैचारिक क्रांति का माध्यम-हिंदी साहित्य का योगदान केवल कविता और कहानी तक सीमित नहीं था। उस समय अनेक पत्र-पत्रिकाओं, जैसे हिंदू, अभ्युदय, कवि वचन सुधा, सरस्वती आदि ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक बल दिया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालमुकुंद गुप्त, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे पत्रकारों ने अपनी लेखनी से अंग्रेजी शासन की पोल खोली और जनता को संगठित किया। इन पत्रों ने अंग्रेजी शासन की नीतियों की आलोचना की और जनता को जागरूक किया।

निष्कर्ष - स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्य का योगदान बहुआयामी रहा। यह साहित्य केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति नहीं था, बल्कि विचारों, आदर्शों और क्रांति की चेतना का स्रोत था। साहित्यिकारों की लेखनी ने जनमानस को झकझोरा, संगठित किया और उन्हें स्वतंत्रता के महासमर में कूदने के लिए प्रेरित किया। साहित्यिकारों ने ही, मृतप्राय भारतवासियों को स्वतंत्रता के सूर्य की अमृतमय प्रथम रश्मि के दर्शन करवाए और

आश्वस्त किया कि अब आजादी आने ही वाली है, बस पूरी हिम्मत से एक बार जोर लगाना है। हिंदी साहित्य ने स्वतंत्रता आंदोलन को केवल शब्दों से ही नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और क्रांति की चेतना से सींचा। यह साहित्य उस दौर का दस्तावेज है, जिसने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया बल्कि, भारत को आजादी की ओर अग्रसर किया। उस समय जब लोग अलग-अलग धर्मों, मजहबों, संप्रदायों, प्रांतों और भाषाई वर्गों में बंटे हुए थे, हिन्दी साहित्य ने ही उन्हें ‘भारतीय’ होने की भावना से जोड़ा और राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। कुछ साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में सीधे-सीधे अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष का आह्वान किया तो कुछ ने अपने लेखों के माध्यम से क्रांति की ज्वाला को और तेज किया। कई रचनाकारों ने साहित्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों जैसे अस्पृश्यता, जातिवाद और अंधविश्वास पर प्रहार किया। प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों ने समाज के गरीब और शोषित वर्ग की पीड़ा को दर्शाया, जिससे लोगों में सामाजिक न्याय की भावना विकसित हुई। हिंदी साहित्य ने भारत के स्वाधीनता संग्राम को वैचारिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक बल प्रदान किया, जो आज भी प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। निष्कर्षतः कहना होगा कि आजादी के आन्दोलन में हिंदी के साहित्यकारों ने वे गीत लिखे, जिन्हें गाते हुए सेनानी हँसते-हँसते हथकड़ी-बेड़ी धारण करते थे और बलिवेदी पर स्वयं को न्योछावर कर देते थे:

**“मौत इकबार आना है तो डरना क्या है?
हम सदा खेल ही समझा किये, मरना क्या है?
वतन हमेशा रहे शादकाम और आजाद,
हमारा क्या है, अगर हम रहें, रहें, न रहें।”**

अशफाक उल्ला खाँ के ये शब्द मातृभूमि के प्रति शीश चढ़ाने वाले शहीदों के संकल्प बन गए।

मनीष प्रताप सिंह

सीनियर सेक्शन इंजी. (टैंडर सेल)
माल डिब्बा मरम्मत कारखाना
कोटा, पंजाब



ऐसा है हमारा किसान

कविता

सेवा के पथ पर चलती है, हमारी भारतीय रेल

आज सुनाता हूँ मैं दास्तान,
कैसा है हमारा किसान

खेत-खलिहानों में वो रहता, करता है जो खेती का काम,
गाय, बैल और ट्रैक्टर है जिसकी शान,
नहर, कुएँ और बोरेल है जिसकी जान,
देश का है वो अभिमान,
ऐसा है हमारा किसान॥



खेतों में उगाता है फल, सब्जी और खाद्यान्न,
पशुपालन भी है जिसका काम,
ऐसा है हमारा किसान॥

हरियाली करके पर्यावरण को बढ़ाता,
देश की प्रकृति और संस्कृति को बचाता,
धोती, कुर्ता और पगड़ी है जिसकी शान,
ऐसा है हमारा किसान॥

खेत में बीज डाल कर वो भूल जाता,
बारिश के लिए वो तरस जाता,
प्रकृति भी जिसका लेती है इम्तिहान,
ऐसा है हमारा किसान॥

खेतों में वो करता विश्राम, सादगी है जिसकी पहचान,
अकाल में वो भूखा सो जाता, कर्ज के कारण देता जान,
ऐसा है हमारा किसान॥

अर्थव्यवस्था में भी जो देता योगदान,
भारत को जिसने बनाया कृषि प्रधान,
अन्नदाता है जिसकी पहचान,
धरती पुत्र है जिसका नाम,
ऐसा है हमारा किसान॥



दुनिया देती है गरीब, गंवार और मजदूर उसको नाम,
मेहनत से जो करता है काम, ऐसा है हमारा किसान॥
'जय जवान जय किसान' नारा,
देता है देश का भूत पूर्व प्रधान,
आज से सबका रखना है ये ध्यान,
किसानों का करेंगे सम्मान॥

अर्जुन कुमावत

तकनीशियन -॥

विद्युत लोको सेड, तुगलकाबाद
कोटा मंडल, पमरे



सेवा के पथ पर चलती है , हमारी भारतीय रेल ।
रास्ट्रीय भावना का सफर है , हमारी भारतीय रेल
विकसित भारत का रथ है, हमारी भारतीय रेल
आत्मनिर्भर भारत की प्रेरणा है, हमारी भारतीय रेल
सेवा के पथ पर चलती है , हमारी भारतीय रेल॥

जातिवाद और धर्मवाद से मुक्त है , हमारी भारतीय रेल।
दो दिलों को आपस में जोड़ती है , हमारी भारतीय रेल
अच्छी अर्थव्यवस्था का प्रतीक है, हमारी भारतीय रेल
रोजगार का एक समुन्दर है , हमारी भारतीय रेल
सेवा के पथ पर चलती है , हमारी भारतीय रेल॥

शहर को गांव से जोड़ती है , हमारी भारतीय रेल
एक अच्छे सेवक की तरह है, हमारी भारतीय रेल
सभी के सपनों को पूरा करती है, हमारी भारतीय रेल
हर यात्री को समय पर पहुँचाती है , हमारी भारतीय रेल
सेवा के पथ पर चलती है , हमारी भारतीय रेल॥

स्वच्छता का सन्देश देती है , हमारी भारतीय रेल।
पर्यावरण की रक्षा भी करती है , हमारी भारतीय रेल
हर समस्या का समाधान है , हमारी भारतीय रेल
स्वस्थ नागरिक की सार्थी है , हमारी भारतीय रेल
सेवा के पथ पर चलती है , हमारी भारतीय रेल॥

नदियों को नदियों से भी जोड़ती है, हमारी भारतीय रेल
कुदरत का एक सुंदर नजारा है, हमारी भारतीय रेल
समुंदर में भी चलती है, हमारी भारतीय रेल
पर्वतों के शिखर को छूती है, हमारी भारतीय रेल
सेवा के पथ पर चलती है, हमारी भारतीय रेल॥

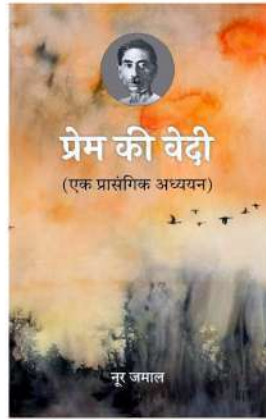
राकेश कुमार शर्मा
लेखाकार (यातायात) लेखा विभाग
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर



नाट्य समीक्षा

प्रेम की वेदी

भारतीय साहित्य और रंगमंच की दुनिया में मुंशी प्रेमचंद का नाम वह शिखर है, जो न केवल अपनी कहानियों और उपन्यासों के लिए बल्कि अपने मानवीय दृष्टिकोण के लिए भी याद किया जाता है। उनकी रचनाएँ जीवन के यथार्थ को अत्यंत सहजता और गहराई से प्रस्तुत करती हैं। हाल ही में जयपुरिया स्कूल के सेठ आनंदराम सभागार में प्रेम की वेदी नाटक का सफल मंचन किया गया, जिसे रंग साधक टीम ने प्रस्तुत किया। इस नाटक के माध्यम से प्रेमचंद की संवेदनाओं, समाज दृष्टि और पारिवारिक रिश्तों की जटिलता को दर्शकों तक पहुँचाने का प्रयास किया गया।



भावनात्मक दृश्यों में प्रकाश परिकल्पना एवं संचालन अत्यंत प्रभावशाली लगा।

(अभिनय और पात्र)- आकार कुशवाहा (योगराज) – योगराज एक ऐसा किरदार है, जिसपर सुंदरता चुपचाप टिकी रहती है, मानो कोई रहस्य जिसे केवल हृदय ही सुन सकता है। जेनी जैसी लड़की जिसे शादी तथा प्रेम से नफरत है वह योगराज को देखते ही उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाती। ऐसे किरदार को जीना तथा मंच में प्रस्तुत करना दुष्कर कार्य था। परंतु आकार ने इस किरदार

में अपनी आत्मा की एकरूपता का सम्मिश्रण कर इसे बखूबी जिया। मंचन के बाद मैंने स्वयं उनके अभिनय से प्रभावित होकर उन्हें गले से लगाया तथा बधाई दी। वे रंगमंच में काफी समय से जुड़े हुए हैं। अपने अनुभवों का प्रयोग करते हुए उन्होंने ना की नाटक को साधे रखा वरन भावुक दृश्यों में अपनी कला-कौशल से झंकृत किया। उम्मीद है वे ऐसी अच्छी प्रस्तुति आगे भी करते रहेंगे।

(कथानक और पृष्ठभूमि)- प्रेम की वेदी प्रेमचंद के लेखन की उस धारा से जुड़ा नाटक है, जहाँ मानवीय रिश्तों में मौजूद ऊष्मा, विडंबनाएँ और संघर्ष स्पष्ट झलकते हैं। कहानी का केंद्र बिंदु प्रेम और पारिवारिक मूल्यों के बीच का द्वंद्व है। यहाँ प्रेम केवल आकर्षण या भावना नहीं है, बल्कि एक ऐसी शक्ति के रूप में प्रस्तुत होता है जो सामाजिक दबावों, जिम्मेदारियों और नैतिकताओं से टकराता है। प्रेम प्रतिपल की एकरूप शांति में, जीवन की अपनी सबसे कोमल कृति चित्रित करता है। प्रेम की बोधगम्यता को साधता रंग साधक द्वारा प्रस्तुत नाटक प्रेम की वेदी।

(मंचन की विशेषताएँ)- रंग साधक टीम ने इस नाटक को अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। मंच-सज्जा में शुभम बारी ने अपने अनुभव की छाप छोड़ी। चूंकि वे मध्यप्रदेश ड्रामा स्कूल एवं हैदराबाद विश्वविद्यालय से नाट्य एवं निर्देशन का प्रशिक्षण ले चुके हैं इसलिए सेट की डिजाइन तथा कला निर्देशक के रूप में उनका काम प्रभावित करता है। 3600° पर्सपेक्टिव होने के कारण संवादों और पात्रों की गहराई को अधिक उभारने के लिए मंच पर अनावश्यक तामझाम से परहेज किया गया। यही कारण था कि दर्शक सीधे पात्रों की भावनाओं और घटनाओं से जुड़ सके। प्रकाश व्यवस्था में भी शुभम बारी एवं देवेंद्र वर्मा ने वातावरण को जीवंत बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। खासकर जेनी, योगराज और मिसेज गार्डन के

रिया सेनानी (जेनी) – जेनी का किरदार इस नाटक की आत्मा कहा जा सकता है। यह किरदार एक कविता की तरह बहता है। जो खुशनुमा पलों में नहीं, बल्कि अशांत जीवन में समाहित है। जो दर्शकों को तत्परता से संभाले जकड़े रखता है। वैचारिक बोधगम्यता का प्रभाव इस किरदार को तार्किक बनाता है। परंतु योगराज के सानिध्य में यह प्रेमी मनुष्य होने का प्रमाण देता है।

रिया सेनानी ने अपने सहज और भावपूर्ण अभिनय से इस पात्र को मंच पर जीवंत कर दिया। उन्होंने प्रेम, पीड़ा और आंतरिक संघर्ष को इतने गहरे तरीके से प्रस्तुत किया कि दर्शक भाव-विभोर हो उठे। उनकी आवाज के उतार – चढ़ाव और चेहरे की अभिव्यक्तियाँ चरित्र को यथार्थ के बहुत करीब ले आईं। सबसे अच्छी बात कि अपनी भावनाओं को किरदार के मीटर के अनुरूप ही रखा, ना अधिक ना ज्यादा। जहां जितना उचित था वहां उतना ही रहा। यह उनकी अभिनय विशेषताओं में से एक है। भविष्य में उनसे ऐसी अनेक अच्छी प्रस्तुतियों की उम्मीद की जा सकती है।

अनामिका सिंह (मिसेज गार्डन) – जेनी की मां के रूप में

अनामिका सिंह जो कि इस नाटक की सह निर्देशिका भी थीं। उन्हें अभिनय करते देख मैं उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। वे आकार वेलफेयर सोसाइटी की सचिव के प्रभार को बखूबी संभाल रही हैं। साथ ही अभिनय के क्षेत्र में जबरदस्त दखल उन्हें बहुआयामी प्रतिभा का धनवान बनाता है। वे बेहद सशक्त एवं मजबूत स्त्री हैं। नाटक के प्रदर्शन के ताम-झाम से लेकर अपने किरदार को निभाने तक के क्रम में उन्होंने बहुत तगड़ी मेहनत की उन्होंने एक ऐसी मां की भूमिका निभाई जो सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक परंपराओं की रक्षा करना चाहती है। परंतु अंत में स्वयं नई परम्परा की खोज की साक्षी बन जाती हैं। उनके संवादों की दृढ़ता और भावनात्मक गहराई ने पूरे नाटक को मजबूती दी।

वैभव (विलियम)— विलियम का किरदार एक गैर जिम्मेदार युवा के रूप में सामने आया। वैभव ने इस किरदार में ढिलमुल रवैये, असमंजस और लापरवाही की झलक को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। उनके अभिनय ने दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर किया कि समाज में कितने ही ऐसे विलियम आज भी मौजूद हैं। साथ ही इस नाटक में हास्य का पुट भी विलियम की एनर्जेटिक एंट्री के बाद शुरू होता है जो कि दर्शकों को बेहद आनंद प्रदान करता है। वैभव की यह दूसरी नाट्य प्रस्तुति रही, उन्हें भविष्यगत ढेर सारी शुभकामनाएं।

पारुल (उमा)— उमा का किरदार अपेक्षाकृत छोटा होते हुए भी नाटक में महत्वपूर्ण था। पारुल ने अपने अभिनय से इस भूमिका को सार्थक बनाया। उनका दखल रंगमंच में अभी नया है। इसके बावजूद उनकी सहजता और मंच पर उपस्थिति आश्चर्यजनक रूप से बेहतरीन रही। योगराज की सहचरी एवं जेनी की सखी होने की भूमिका में उन्होंने प्रभावित किया। उनसे भविष्य में और अच्छे अभिनय की उम्मीद रखी जा सकती है।

सागर (डॉक्टर) — डॉक्टर का किरदार इस नाटक में सबसे छोटा था। इस नाटक की तीन दिनों में कुल छह प्रस्तुतियां हुईं। जिसमें सागर अभिनय के अलावा इस नाटक में संगीत ऑपरेट कर रहे थे। उन्होंने दोनों काम बखूबी किए।

निर्देशन — नाटक का निर्देशन अनुराग श्रीवास्तव ने किया। निर्देशन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इसमें पात्रों की

आंतरिक भावनाओं को केंद्र में रखा गया। मंचन का प्रत्येक दृश्य दर्शकों को पात्रों की मनःस्थिति में गहराई से झाँकने का अवसर देता है। संवादों की गति, मंचीय गति-विधियाँ और दृश्य परिवर्तन बेहद संतुलित लगे। चूँकि अनुराग श्रीवास्तव स्वयं बेहतरीन अभिनेता हैं उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि दर्शक नाटक के दौरान कहीं भी उबाऊपन का अनुभव न करें। प्रत्येक दृश्य के बीच सामंजस्य बनाए रखना और चरित्रों को उनके सम्पूर्ण आयामों में प्रस्तुत करना उनके निर्देशन की सफलता कही जाएगी। इस उपक्रम में अमित शुक्ल एवं शुभम बारी का उन्हें अच्छा साथ प्राप्त हुआ।

हालांकि लंबे फेडआउट नाटक की गति को धीमा बनाते है। इस पर कार्य किया जा सकता था। उम्मीद है कि आगे इस बावत अवश्य ध्यान दिया जाएगा। नाटक प्रेम की वेदी केवल प्रेमचंद के साहित्य का मंचन भर नहीं था, बल्कि यह दर्शकों के लिए एक भावनात्मक और बौद्धिक अनुभव भी रहा। प्रेम, जिम्मेदारी, सामाजिक मान्यताओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच चलने वाले द्वंद्व को नाटक ने गहराई से छुआ।

दर्शकों ने पात्रों के साथ स्वयं को जोड़ते हुए उनकी पीड़ा और संघर्ष को महसूस किया। विशेषकर जेनी, योगराज और मिसेज गार्डन के संवादों ने सभागार में गहरी चुप्पी पैदा कर दी, जो इस बात का प्रमाण है कि कलाकारों ने दर्शकों के हृदय तक अपनी बात पहुँचाई। प्रेम की वेदी का यह मंचन रंग साधक टीम के लिए एक उल्लेखनीय उपलब्धि रहा। यह इस नाट्य समूह की पहली प्रस्तुति थी, इसमें अभिनय, निर्देशन और मंचन की त्रयी ने मिलकर इसे यादगार बना दिया। यह नाटक न केवल प्रेमचंद के नाट्य लेखक के योगदान को रंगमंच पर जीवित करता है, बल्कि यह भी बताता है कि आज के समाज में भी उनकी रचनाएँ उतनी ही प्रासंगिक हैं। प्रेम की वेदी पर रचे गए संघर्ष और भावनाओं के दृश्य लंबे समय तक दर्शकों की स्मृतियों में जीवित रहेंगे।

मयंक अग्निहोत्री
कनिष्ठ लिपिक/परिचालन विभाग
मुख्यालय, जबलपुर, पमरे



व्यंग्य

आई हिंदी ऋतु आई

हे सखी.....यह क्या हो गया। कैसी हवा चल रही है। न जाने कैसे फूलों की खुशबू से धरती महक उठी है। ऐसी मनमोहक सुगंध तो वर्ष में एक बार ही महकती है। ऐसे पुष्प तो वर्ष में एक बार ही खिलते हैं। लगता है हिंदी ऋतु आ गई है। चारों ओर क्यारियों में हिंदी के फूल चहक रहे हैं। जैसे सावन में काले मेघों को देखकर कोयलें कूकने लगती हैं, वैसे ही हिंदी दिवस की तिथि नजदीक देखकर चहुं ओर हिंदी के शब्द गुंजायमान हो रहे हैं। साल में एक बार कूकने वाली इन मधुर हिंदी शब्द की ध्वनियां मन को कितना सुकून दे रही हैं। हे सखी.....अचानक यह क्या हो गया। आज तो जिधर देखूं, उधर हिंदी ही हिंदी

नजर आ रही है। कल तक तो हिंदी कहीं नहीं थी। दूर-दूर तक हिंदी के शब्द कहीं नजर नहीं आते थे। पर अब तो सब बदल गया है। सभी कार्यालय, संस्थानों में हिंदी के नए पट्टे कितने सुंदर प्रतीत हो रहे हैं। जल्दबाजी में किए गए रंग-रोगन की महक एक अलग ही आनंद दे रही है। यह क्या न जाने कितने बिहारी के पत्र केट संस्करणीय कवियों का जन्म हो चुका है। इन नवकवियों द्वारा रचित तुकबंदीय कविता के बेमेल आगोश में हिंदी की महिमा हिलोरे मार रही है।

हे सखी, गूगल पर सर्च चल रही है। गूगल हैरान है। यह क्या हो गया। यह हिंदी-हिंदी क्या है। इतने दिनों से तो किसी ने सर्च नहीं किया। आज अचानक क्यों सर्च किया जा रहा है। कहीं यह कोई संदिग्ध मूवमेंट तो नहीं है। कहीं अब इसे ब्लॉक तो नहीं करना पड़ेगा। गूगल को खुद गूगल करना पड़ता है। कि हिंदी पर निबंधों को इतना क्यों ढूंढा जा रहा है। अचानक कैसे हिंदी की इतनी डिमांड बढ़ गई है। तब जाकर पता चलता है कि इस पर्टिकुलर डे हिंदी को सेलिब्रेट करने का रिवाज है। हे सखी। मौसम को क्या हो गया है। चारों ओर माहौल बदल चुका

है। सरकारी कार्यालयों में विभिन्न कर्मचारी, हिंदी के भाषण लिए अखाड़े में कूद चुके हैं। वे अंग्रेजीमय उच्चारण के साथ हिंदी की अद्भुत जुगलबंदी कर रहे हैं। इस जुगलबंदी से हिंदी खुद शर्मा रही है। हिंदी इमोशनल हो गई है। यह लोग इतना प्यार करते थे, उसे तो पता भी नहीं था। जब वो हिंदी दिवस पर अपने प्रेम भरे भाषण सुनती है। तो उसे विश्वास नहीं होता। कोई किसी को इतना कैसे चाह सकता है। वो इमोशनल हो जाती है। पर उसे समझ नहीं आता कि ये प्यार एक दिन से अधिक क्यों नहीं चल पाता। बस यह प्यार आज, और केवल आज का है।

कल और आयेगे, नगमों की भीगी कलियां चुनने वाले। कल से फिर वो ही अंग्रेजी ही अंग्रेजी।



हे सखी, सभी कार्यालयों में हिंदी उत्सव की धूमधाम है। नाना प्रकार के प्रमाण-पत्र बंट रहे हैं। हिंदी में कार्य करने के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। इनाम बांटे जा रहे हैं। अब बजट है तो थोड़ी-बहुत पार्टी-शार्टी भी हो ही जाती है। लोग हिंदी की प्लेट में समोसे-चिप्स बड़े टेस्ट लेकर खा रहे हैं। हे सखी.....मुझे तो अपनी आँखों पर

विश्वास नहीं हो रहा है। अंग्रेजी न बोलने पर

जुर्माना लगाने वाले स्कूल भी आज हिंदी महिमा की चालीसा पढ़ रहे हैं। हे सखी, आज का दिन हिंदी के लिए कितना शुभ लग रहा है। अंग्रेजी तो न जाने कहां गायब हो गई है, कहीं ढूँढने से भी नहीं मिल रही। चहुं ओर हिंदी का महिमामय वर्णन सुनकर लग रहा है। कि इस देश में अंग्रेजी शिक्षा, कुछ ही दिनों की मेहमान है। लग रहा है कि बस इस सत्र से अंग्रेजी स्कूल बंद होने वाले हैं। हे सखी...मुझे तो अंग्रेजी स्कूलों की चिंता होने लगी है। ये बिचारे रोजगार के लिए कहाँ जाएंगे।

हे सखी.....आज भारतवर्ष के समस्त हिंदी प्रेमियों के चेहरे

पश्चाताप के भाव से भरे हुए हैं। सबकुछ हिंदी फिल्म की भांति लग रहा है। हिंदी फिल्म का नायक प्रारंभिक दौर में अंग्रेजी लटको-झटकों से युक्त खलनायिका के चंगुल में भले ही फंस गया। पर आज हिंदी दिवस के करूणामय गान, 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' सुनकर भावविहल हो उठा है। अब वो दिन दूर नहीं जब वो अपनी अंग्रेजी खलनायिका को अपने घर से बाहर कर संस्कारवान हिंदी बहू को अपने घर में जगह देगा। हे सखी, नाना प्रकार की सोशल साइट्स आज हिंदी प्रेम में डूबी हुई है। प्रेम और विरह में डूबे हुए व्हाट्सएप, ट्वीटर और इंस्टाग्राम आज हिंदी प्रेम की पोस्ट से पटे पड़े हैं। चारों ओर हिंदी ही हिंदी छा रही है।

हे सखी.....आज जगह-जगह हिंदी के जागरण चल रहे

हैं। हिंदी के सम्मान में कवि सम्मेलनों, काव्य संगोष्ठियों, चर्चा-परिचर्चा आदि नाना प्रकार के आयोजन हिंदी का गौरव बढ़ा रहे हैं। न जाने कितने गान, न जाने कितने काव्य, न जाने कितनी कथाएँ बस हिंदी की शान में चार चाँद लगा रही है। ओ सखी, बट व्हाई आर यू वीपिंग। ओह सॉरी अरे क्षमा कीजिएगा..... तुम क्यों रो रही हो। अब तो आज से सब बदलने वाला है।

शरद उपाध्याय

सेवानिवृत्त कार्यालय अधीक्षक एवं
वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार, कोटा



भ्रष्टाचार.....

खोखला कर रहा देश को, सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार ।
जड़े जमाएं गहराई से, पूरा सिस्टम हैं लाचार ॥
ऊपर बैठे ज्यादा कर रहे, पर हम भी हैं जिम्मेवार ।
दोषारोपण करते हैं पर, स्वयं पालन को नहीं तैयार ॥
रिश्वत, गबन, तस्करी, छलकपट या हो कोई दुराचार ।
ये कुकर्म ही देशद्रोह हैं, भ्रष्टाचार के विभिन्न प्रकार ॥
भोजावादी मनोविकार, देते कुआचरण और व्यवहार ।
सत्य, धर्म, ईमान, परोपकार, खो दिए सब संस्कार ॥
ये अनर्थ स्वार्थ लालसा, देती समाज को व्यभिचार ।
थे हम सोनें की चिड़िया, दुहाई देता था पूरा संसार ॥
अभी समय है जागो उठो, अपना- अपना करो सुधार ।
देश विकास और प्रगति में, सब मिलजुल हो भागीदार ॥
प्रण लें और करें विचार ।
चलों मिटाएं भ्रष्टाचार ॥

राकेश कुमार 'रजक'

सीनियर सेक्शन इंजी.(कै.वे.)
रानी कमलापति रेलवे स्टेशन
भोपाल मंडल, पमरे

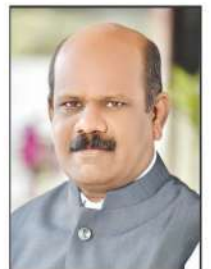


सभी को खबर हो गई

एक छोटी बस्ती जब से शहर हो गई ।
सच कहता हूँ, हवा भी जहर हो गई ।
कांक्रीट के जंगलों में, बचे नहीं दरख्त
बेमौसमी बारिश खुदा का कहर हो गई ।
तहजीब से परहेज किया, नई पीढ़ी ने
हिंसा वारदात जमाने की लहर हो गई ।
झूठ और बेईमानी छिपकर देखी थीं हमने
यकीं नहीं होता, सभी को खबर हो गई ।
मिलता सुकूं, जीवन की शाम ढलने पर
भोर की बेला में, थमी सी दोपहर हो गई ।
खाबों की खातिर, रात गुजारी यादों में
आँख लगी न थी और सहर हो गई ।

संत कुमार मालवीय 'संत'

वरिष्ठ तकनीशियन
सडिपुका निशातपुरा, पमरे, भोपाल



लेख

दीवाल दिवाली और दिवाला के बीच अंतराबंध

भाई साहब कहीं आपको ऐसा तो नहीं लग रहा कि दीवाल दिवाली और दिवाला शब्द यों ही तुकबंदी के लिए यहां जबरिया जड़ दिए गए हैं और इनका आपस में कोई तार्किक या वैज्ञानिक संबंध नहीं है अगर कहीं ऐसा है तो यह भ्रम तुरंत अपनी खोपड़ी से बाहर निकाल फेंकिए। दीवाल दिवाली और दिवाला में महज कुछ मात्राओं का मात्रा भार खेल ही नहीं है, बल्कि यह कुछ ज्यादा ही मात्रा में एक-दूसरे से आपस में जुड़े हुए और गुत्थम गुत्था हैं। यह तीनों शब्द जैसे जुड़वां या यूँ कहें तिड़वां भाई हैं एक-दूसरे के पूरक हैं, एक दूसरे के बिन अधूरे हैं आपने गौर किया होगा दिवाली सबसे पहले दीवाल पर ही आती है, दीवारें चमक रही हैं उन पर एक से बढ़कर एक महंगे से महंगे पेंट पोते जा रहे हैं और मालिक की पेंट ढीली और गीली हुई जा रही है, दीवाल पर रंग और नूर हैं आ रहा है दीवाल मालिक का नूर और रंग महंगाई की मार से उड़-उड़ जा रहा है। दिवाली पर दीवाल क्या दिवालों के आँखें नाक और कान भी साफ हो गए हैं वे अब पहले से ज्यादा दूर तक की बातें सूँघ, देख व सुन सकती हैं, कमजोर दिवालें दिवाली के बहाने फिर से मजबूत की जा रही हैं, जहाँ जरूरत नहीं है वहाँ भी दीवालें खड़ी की जा रही हैं। आखिर दिवालें खड़ी करना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।

भाई-भाई के बीच दीवाल हां दीवाल को आप दीवार भी कह सकते हैं भूल गए आप सुपरस्टार अमिताभ बच्चन की सुपर हिट फिल्म कैसी दीवार थी दोनों भाइयों के बीच, यानी अमीरी गरीबी की दीवार, ईमानदारी और बेईमानी की दीवार, चोरी और सीना जोरी की दीवार, आस्तिक और नास्तिक की दीवार और फिल्म देखने वाली पब्लिक या जिसे आप असल में दुनिया की आम जनता भी कह सकते हो किसके साथ थी, यह हम नहीं बताएंगे क्योंकि आप खुद बताएं कि आप दीवार के इस पार या उस-पार किधर थे सरकार वर्दी वाले के साथ या अंधेरगद्दी वाले के साथ, दिल पर हाथ रखकर जबाव देना।

दी 'वार' को अंग्रेजी में कहें तो भाई यह युद्ध है, और बार का अर्थ एक बार कहो या बार बार कहो वाइन या बियर बार ही होता है, और बार के साथ बाला जोड़ दिया तो फिर बला ही बला। अरे भैया कहां उलझा दिया इस दिवाली की दीवाल ने यह तो ग्रेट वाल ऑफ चाइना हुई जा रही है। पहले आपने देखा होगा राजा महाराजा किले ज्यादा आसपास दीवाल में ज्यादा पैसा खपा देते थे। यानी दीवाल सदियों से है तो कमाल की चीज लंबी दीवारें चुनवा दो, लाख बिठा दो पहरें, तूफान कब रुकते हैं यानी जेल या काल कोठरी की दीवार को यदा कदा लोग फांदते ही रहते हैं। दिवाले कच्ची होती हैं दिवाले पक्की होती हैं, यह भी

अच्छा ही हुआ इस दिवाली के बहाने दीवाल की पूरी जन्मपत्री खुल गई।

केवल दिवाले दृश्य ही नहीं होती भैया अदृश्य भी होती हैं और यह ईंट पत्थर रेत लोहे गिट्टी से बनी दीवारों से भी कहीं मजबूत और शक्ति शाली होती हैं, आप देखिए जातिवाद, प्रांतवाद, भाषा धर्म की दीवारें, नफरत और बंटवारे की दीवारें जो अब तक गिरा देना चाहिए थी उन्हें भी फिर से मजबूत किया जा रहा है, और कुछ नई तथा ऊंची दिवालें उठाई जा रही हैं। अब यह दिवाली पुराण के बीच में दीवाल पुराण ऐसा घुसा की खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा जैसे 'हरि अनंत हरि कथा अनन्ता' सो हाथ जोड़ कर इस अध्याय को यहीं समाप्त किया जाए।

अब दिवाली पर अखबारों और चैनलों पर विज्ञापनों के बीच पाठक दर्शक समाचार ढूँढ़ने को अभिशप्त है, कई बार वे जिसे समाचार समझ बैठते हैं वह भी असल में समाचार के खोल छिपा हुआ विज्ञापन ही होता है। यह विज्ञापन हैं बंपर सेल के, त्योहारी छूट के, एक के साथ दो फ्री के, आसमानी गुणवत्ता और जमीनी कीमत के, आईए-आईए सब कुछ मुफ्त के भाव ले जाईए, दिवाली मनाइए। आप दिवाली के दिये, रुई और मोमबत्ती खरीदने निकलते हो और लौटते समय यह तीनों चीजें छोड़ गधे से लदे हुए नाना प्रकार के जरूरी, अर्ध जरूरी और गैर जरूरी सामान लेकर वापिस घर लौटते हो, आखिर सुबह का भूला ग्राहक बाजार से शाम को लुटपिट कर घर जिंदा सही सलामत लौट आए तो उसे समझदार ही तो कहा जाएगा।

जिनको मीठा मना है वे शुगर फ्री के नाम पर घोर शक्कर की मिठाई ऊंचे दाम में खरीद कर सिक्कोर फील कर रहे हैं जो मावा मिलावट के बाबजूद ऊंची सेटिंग के चलते खाद्य विभाग ने फिंकवाया नहीं उस शुद्ध मावे की मिठाई समझ ग्राहक मक्खियों की तरह झूमे पड़ रहे हैं। आखिर दिवाली है भाई कुछ मीठा हो जाए। ऐसा संयोग नहीं है भाई की दिवाली और दिवाला शब्द आपस में मिलते हैं आखिर शाब्दिक के साथ आर्थिक रूप से भी तो उनमें साम्य है। दिवाली आने के दो चार महीने पहले से ग्राहक की चारों तरफ से घेराबंदी शुरू हो जाती है, उसे मीठे-मीठे लुभावने विज्ञापनों में फंसाया जाता है, और वह एक कीड़े मकोड़े की तरफ खुद मकड़ी के जाल में फंस जाता है, यह उसकी नीयत और नियति दोनों का मिलजुला परिणाम होता है।

दिवाली पर दिवाला कोई यूँ ही थोड़े निकलता है भाई, जब आप खुद अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने को उतारू हो तो दूसरा



कविता

राजभाषा हिंदी को अपनाये हम

एक बने नेक बने प्रेरक बने हम,
अनेक हैं भाषायें, एक चुनें हम,
राजभाषा हिंदी को अपनाये हम॥

माना भारतवर्ष की भाषायें अनेक,
एक सूत्रता में पिरोये हिंदी एक,
सहज सरल भाषा यह है प्रेरक,
अपना रज निजभाषा का पोषक,
अपनी संस्कृति का इसमें महक,
दिल में उतरे है ये खरा कनक,
इस खरे कनक को शृंगार बनायें हम,
राजभाषा हिंदी को अपनाये हम ॥

राजभाषा हिंदी को संविधान ने अपनाया,
गृह मंत्रालय ने चरणबद्ध योजना बनाया,
प्रधानमंत्री को के.हि.स. का अध्यक्ष बनाया,
प्रसार करने को प्रोत्साहन योजना चलाया,
भारतेन्दू ने इसके उत्थान का मार्ग बताया,
हिंदी, हिन्दू, हिन्दुस्तान का नारा अपनाया,
अब इस नारे को अपना बनाये हम,
राजभाषा हिंदी को अपनाये हम॥

अपनी पहचान विश्व में बनाना है,
वसुधैव कटुम्बकम् भाव फैलाना है,
राजभाषा हिंदी को मान दिलाना है,
अनेकता तज एक भाषा अपनाना है,
प्रण लें राजभाषा परचम लहराना है,
प्रण से जन-जन यह बात लेकर जायें हम
राजभाषा हिंदी को अपनायें हम॥

क्या करे। दिवाली है कुछ तो खरीद लो ऐसा मुहूर्त और ऐसी दिवाली जिंदगी में अब कभी नहीं आने वाली, यानि बस आखिरी एक मौका। अरे जरूरत नहीं तो क्या जरूरत पैदा करो सोना चांदी, कपड़े, बर्तन कुछ नहीं तो गाड़ी टी.व्ही.फ्रिज, वाशिंग मशीन, फर्नीचर सबकुछ अच्छे हैं तो मॉडल के नाम पर या इन्हें बहुत दिन हो गए हैं तो जूने पुराने नाम पर बस बदल डालो दिवाली के मौके पर छूट का फायदा उठा लो नगद नहीं तो उधार भी चलेगा पूरा नहीं तो किश्त भी चलेगा, पर भैया दिवाला तो निकलकर ही रहेगा ना ? अरे कुछ नहीं तो बम और बारूद ही खरीद लो, सीमा पर या दुश्मनों पर नहीं तो अपने घर और मोहल्ले में ही फोड़ लो फरमाइशों की फुलझड़ी जला लो, इरादों के अनार चला लो, चकाचौंध की चकरी कोई कमी है क्या जब आगे पीछे ऊपर नीचे हर जगह से दिवाली पर धुंआ निकल ही रहा है तो थोड़ा धुंआ-धुंआ जिंदगी और भी सही। दिवाली कोई रोज-रोज थोड़े आती है साल भर का त्योहार है देख रहे हो हर तरफ धूम मची हुई है फिर ऐसे में भला आप इस धूम से अपने को कैसे अलग कर लोगे, जब सारे कुएं में ही भांग घुली है तो तुम कैसे इसके नशे से बचोगे। यानि संत कबीर की वाणी असत्य कैसे हो सकती है- 'दसों दिशाओं लगी आग, कहे कबीर कहां जइयो भाग।' तो दिवाली पर आप भी अपना दिवाला निकालने के लिए अपनी हैसियत और जरूरत से आगे बढ़कर अपने कपड़े उतरवाने के लिए बाजार में उतरिए, आपका स्वागत है।

अब उल्लू की सवारी लक्ष्मी जी को यूं ही थोड़ी पसंद है खुला खेल है लोगों को उल्लू बनाओ पैसा कमाओ यानी लक्ष्मी जी घर लाओ और उल्लू बनाने के लिए लोगों की दिवाल में सेंध लगाओ उनकी रंगारंग धमाकेदार दिवाली मनवाओ भले उनका दिवाला निकल जाए उस पर मत जाओ, इसलिए कहा गया है भैया दिवाल दिवाली और दिवाला का गहरा अंतर्संबंध है, कल्लू समझे का नहीं समझे समझोगे भी कैसे उल्लू जो ठहरे, लक्ष्मी जी के वाहन निकलवाओ अपना दिवाला और बनाओ लोगों को लक्ष्मीपति। यह तो पक्का है दिवाली ग्राहक के फायदे का सौदा हो या नहीं सेठ के फायदे का सौदा तो पक्के में होता है।

घनश्याम मैथिल 'अमृत'
सेवानिवृत्त वरि. तकनीशियन
एवं वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार
भोपाल



देशबन्धु 'दिव्य'
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
मडिमका, कोटा, पमरे



ए आई और हिंदी...

आधुनिकता के दौर में शोध और खोज के क्या कहने? इसके तहत जीवन की जरूरतों के मद्देनजर हर क्षेत्र में एक से बढ़कर एक कार्य किये जा रहे हैं। नतीजतन, हमारे बीच आधुनिक तकनीक के नये-नये शब्दों की आमद होती ही रहती है। इन्हीं तकनीकी शब्दों में 'ए आई' और 'ए जी आई' जैसे शब्द हमारे बीच तेजी से उभर कर आए और लोगों को इस कदर भाए मानों आंधी के आम! इसकी प्रसिद्धि और प्रभाव की तो ऐसी गजब बात कि जिधर देखो 'ए आई'। जीवन के हर क्षेत्र में 'ए आई'। यहाँ तक की बात-बात में 'ए आई' ! 'एआई' से संबंधित समाचार! 'एआई' में ये, 'एआई' में वो। इसे देख तो ऐसा लगता है कि ये 'एआई' न हुआ, ताश के खेल का 'टंप' हो गया। जिसके बिना खेल ही अधूरे। जिसे हम चुनें वही हम पर भारी! और हम आभारी होने के लिए मुंह ताकें। इधर उधर झाँकें। फिर भी मामला जस का तस! ऐसे में ये जुमला 'कुछ तो कुदरती, बचा-खुचा फितरती' बार - बार मन को उद्वेलित करता है। लेकिन खेलने वाला सिवाय खेलने के कर भी क्या सकता है?

'एआई' तकनीक के सहारे लोग कल्पना की उड़ान भरने लगे हैं। सपने संजोने लगे हैं। जिज्ञासु प्रवृत्ति के लोगों में इसकी जानकारी हासिल करने की हाय तौबा ने धमाल मचा दिया है। जानने-समझने वालों की पूछ-परख में अप्रत्याशित बढ़ोतरी होने लगी है। ऐसे चाहने वाले वास्तव में तारीफे काबिल हैं। इनके उत्साह, उमंग व चाहत की तो बात ही क्या? एक जमाना हुआ, जब हमारे बीच अंग्रेजी के एक शब्द 'इलू-इलू' ने पलक झपकते ही लोकप्रियता में 'बुर्ज खलीफा' जैसे टावर की ऊँचाई को पीछे धकेल दिया था। हालांकि, शब्द और उससे जुड़ा मतलब अंग्रेजी में था। मगर, खलबली हिंदी प्रेमियों के बीच मची हुई थी। कारण कि हमारी हिंदी भाषा की तरह हिंदी भाषियों का दिल भी बड़ा होता है। बड़े दिल की बात ही निराली होती है। बतौर जानकारी हमारी हिंदी भाषा ने कई विदेशी भाषा के शब्दों को आत्मसात कर रखा है। इस लहजे से विदेशी शब्द हमें इतने सहज व सरल लगते हैं कि हम समझ ही नहीं पाते कि क्या हमारा है और क्या पराया। हम तो बोलने और लिखने में ही पूरे जी जान से जुटे रहते हैं। वो तो भला हो विद्वतजनों का जिनके ज्ञान के कारण हमें इस बात

का भान हो जाता है कि क्या देशी है और क्या विदेशी! वैसे, बड़े दिल के कारण हम इन झमेलों में पड़ना भी नहीं चाहते। देखा जाए तो पड़ कर करेंगे भी क्या? हर खास और आम तो अंग्रेजी का ही दीवाना है! हमारी दीवानगी, हमारे सर चढ़कर कितना बोलती है, ये बात देशी के साथ विदेशी भी भलीभांति जानते-समझते हैं। जबकि, हमारी दीवानगी का खामियाजा हमने हमेशा मजे के चक्कर में ही भुगता है। खैर...! 'जो बीत गया सो बात गई, जो चल रहा है वो सौगात नई' जैसी सीख सर माथे पर! जीवन में यहाँ तक की उड़ान तो हमने कुदरती दिमाग से सफलता पूर्वक भर ली। अब, आगे की उड़ान बतौर विकल्प 'एआई' जैसी तकनीक के सहारे भर ही लेंगे। फिलहाल, तो हर बार की तरह नयी तकनीक के स्वागत व सत्कार का आनंद तो जोर - शोर से उठाना ही चाहिए। बाकी बाद में देखा-सुना जाएगा।



अगर, शब्दों पर गौर किया जाए तो 'एआई' और 'एजीआई' जैसे शब्द हमारे लिए बिल्कुल भी नये नहीं। ये शब्द तो हम बचपन से ही अपने गाँव-घर में हमेशा से ही कहते-सुनते आए हैं। हमें याद है कि अपने जमाने के विशुद्ध देशी स्कूल में मास्साब के द्वारा किसी गलती पर जब छड़ी की मार हथेली पर पड़ती थी तो 'एआई, 'वो आई, 'जीआई' जैसे दर्द भरे शब्द मुखारविंद से स्वतः ही प्रस्फुटित हो

जाया करते थे। मगर, इन शब्दों को सुनकर मास्साब की त्योरियाँ और भी चढ़ जाया करती थीं। वो चढ़ी हुई त्योरियों के साथ और भी जोर से छड़ी चिपकाते हुए झल्लाकर कह उठते थे कि 'ये,आई-आई क्या है?' तब हमें इस बात का बिलकुल भी अनुमान नहीं था कि दर्द की वजह से मुंह से बाहर कूद कर भागे हुए ये शब्द भविष्य में किसी तकनीक का संक्षिप्त रूप बनकर देश-दुनिया में तहलका मचा देंगे।

अक्सर हमारी भाषा बोली में 'संज्ञा' की जगह 'सर्वनाम' का उपयोग ज्यादा होता है। यही कारण है कि किसी को बुलाते समय नाम न लेकर ए जी, वो जी, लो जी, सुनो जी, ये, वो जैसे शब्दों का अधिकतर उपयोग होता है। हमारे घरों में आज भी किसी बड़े के बुलाने पर महिलाएं 'जी, आई' और ज्यादा ही प्यार से बुलाने पर 'जी, आई-आई' कहकर ही उपस्थित हुआ करती

हैं। हमें 'एआई' और 'एजीआई' जैसे शब्दों को कहने-सुनने का पूरा अभ्यास है। इसीलिए, हम इन शब्दों के इस्तमाल को लेकर बिल्कुल भी तनाव में नहीं। मगर, बुजुर्गों ने फरमाया है कि 'अति विश्वास' घातक होता है। अतः इससे बचने के लिए निश्चितता बिल्कुल भी ठीक नहीं। लिहाजा, 'एआई' को जानने के साथ यह जान लेना भी बेहद जरूरी है कि आधुनिक समय नयी-नयी तकनीक का है। वैज्ञानिक व विज्ञान का है। नयी तकनीक आएगी तो नये-नये शब्द गढ़े जाएंगे। शब्द आएंगे तो उसके अर्थ तलाशे जाएंगे। इससे शब्द कोश बढ़ेगा। भाषा समृद्ध होगी। विज्ञान और वैज्ञानिक दोनों ही आगे बढ़ेंगे। किसी बहाने ही सही रोजगार के द्वार खुलेंगे। ज्यादा नहीं तो कुछ अपने हिस्से आ ही जाएगा। जितना भी आएगा, अपन उसी में ही संतोष कर लेंगे। ऐसा कर लेने से उस महान व्यक्ति की आत्मा को संतोष तो मिलेगी जिसने 'समथिंग इज बैटर देन नथिंग' जैसे संतोषी व सद्बिचारों वाले वाक्य की रचना की थी। भविष्य में 'एआई' जैसी तकनीक नयी-नवेली बहू की तरह ज्यादा समय तक चुप रहकर नहीं बैठने वाली। क्योंकि, विशेषज्ञों ने इसके विकास को प्यारे बाघ के शावक को पालने जैसा बताया है। अब, बाघ का शावक आगे चलकर खतरनाक न हो, इस बात की गारंटी तो बाघिन भी लेने से रही। मोबाइल के शुरुआती दौर में मोबाइल का उपयोग सिर्फ बातचीत के लिए था। परन्तु, बाद में इसके अंदर पूरी दुनिया ही समा गई। अब, दुनिया भर की खुशियां, खुशी के पिटारे में तरह-तरह के दर्द के साथ हमारे बीच दिन-रात तुमके लगा रही हैं।

'एआई' और इसका जुड़वां भाई 'एजीआई' वो तकनीक है जो इंसान के दिमाग के बराबर या उससे कहीं आगे बढ़कर काम करने वाली होगी। अभी तो शुरुआत है। परन्तु, 'फिर..., होगा क्या, क्या पता क्या खबर' को ध्यान में रखते हुए विचार आया कि जब यह तकनीक ऐन्ड्रॉइड मोबाइल की तरह आम से भी खुल्ला आम हो जाएगी तो निश्चित है 'एआई' यानी कि 'आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस' के पिटारा बनाने का काम बाजारवाद के चलते जब ठेठ कामर्शियल हाथों में आएगा, तब अपने-अपने फायदे और कायदे अनुसार इसका नामकरण भी होगा और विज्ञापनीकरण भी। हो सकता है कि भविष्य में हमें बड़े-बड़े पोस्टरों में डिजिटल तकनीक के माध्यम से बताया जाए कि 'फलां कम्पनी के बनाए हुए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस' वाले दिमाग का इस्तेमाल करें और कारोबार को रातों-रात आगे बढ़ाएं। 'ये विज्ञापन भी आ सकता है कि' फलां कम्पनी के बनाए आर्टिफिशियल दिमाग में भी कोई दिमाग है, जो हमारे बनाए

दिमाग से दिमाग लड़ा सके। विज्ञापन की होड़ व दौड़ में ग्राहक को लुभाने के लिए कुछ भी गढ़ा जा सकता है। फिलहाल तो 'एआई' को समझिए भी और इससे जूझिए भी!

सतीश चंद्र श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त वरि. तकनीशियन एवं
हिंदी साहित्यकार
सडिपुका/निशातपुरा, भोपाल (म.प्र.)



कविता रंग जीवन के

होता यह आसान नहीं है, साथ खड़े हों संकट में।
हर धड़कन में नेह भरा था, सन्नाटा अब पनघट में ॥

साथ खड़ा जब नेह दिखे तब, सदा शून्य से शिखर गए।
जाने कितने रंग प्यार के, जीवन पथ पर बिखर गए ॥

एक तुम्हारा होना मुझको, क्या से क्या कर देता है।
प्रेम मिला जब भी जीवन में, हुए प्रफुल्लित निखर गए ॥

कुछ भी करने का साहस हो, उसको आगे बढ़ना आया।
संकट जब भी सम्मुख आए, जीवन को तब गढ़ना आया ॥

संकल्प समर्पण के लिखते, हर युग में है इतिहास नया।
कुछ गीत प्रणय के लिख डाले, आँखों को जब पढ़ना आया ॥

सूनेपन में कुछ रंग भरें। मन को अपने क्यों तंग करें ॥
जीवित रखने मन की बस्ती। आओ थोड़ा हुड़दंग करें ॥

बढ़ रही पिपासा प्रतिदिन जब, कैसे संयम से जंग करें।
है खड़ी प्रणय के द्वार प्रिये। अब सभी निराशा भंग करें ॥

यौवन लाया जब मनमानी। प्रेम लिखेगा करुण कहानी ॥
आकुलता ने चरण पखारे। घूम रहे हैं सुध-बुध हारे ॥

कभी प्रेम में आँसू होंगे, कभी मिले लाचारी।
यही है जीवन का संघर्ष, न जाने नर न नारी ॥

देबराज चापागाई
कार्यालय अधीक्षक एवं
संपर्क राजभाषा कर्मचारी
वाणिज्य विभाग, मुख्यालय, पमरे



लेख

आवेदन पत्र

सेवा में,

जिस किसी से भी संबंधित हो

विषय : स्वयं के घर पर अदालत खोल लेने हेतु आवेदन पत्र।

उपरोक्त विषय में निवेदन है कि मैं क ख ग कुमार बी ए एलएलबी डिग्री धारक एवं बेरोजगार हूँ। बढ़ते अपराध और न्याय व्यवस्था में देरी के कारण वकालत में रोजगार की उम्मीद से एलएलबी किया था मगर बढ़ती बेरोजगारी एवं घर बैठे तनखाह मिलने की उम्मीद से एलएलएम भी कर लिया है, पर नौकरी और स्वरोजगार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, ऑफिस पॉलिटिक्स इत्यादि के कारण समुचित धनार्जन नहीं कर पा रहा हूँ। सच बोलने का स्वभाव, बातों को घुमा फिरा कर कहना ना आने का अभाव, बात का बतंगड़ और बतंगड़ की बात ना बना पाने की कमी, स्वभाव में रौबीलापन, किसी की भी बात ना सुनना ना मानना, के कारण वर्तमान वकील व्यवस्था में अपने आप को अनुपयुक्त अक्षम पाता हूँ। जैसा कि अक्सर कहा जाता है कि कमजोरी को ही ताकत बना लेना चाहिए इसी को फॉलो करते हुए मैं अपने आप को न्यायकर्ता के पद के लिए सर्वथा अति योग्य उपयुक्त पाता हूँ। अतः जो वकील नहीं बन पाया है, वह जज बन पाए इसी उम्मीद में यह आवेदन लिख रहा हूँ।

महोदय जी, अगर मुझे घर पर ही अदालत खोलने की अनुमति दी जाती है मैं आपसे वादा करता हूँ कि वर्तमान चल रही व्यवस्था को कोई प्रतियोगिता प्रदान नहीं करूंगा। अगर वर्तमान में कोई जज किसी तारीख को 2 महीने बढ़ाता है तो मैं भी 2 महीने से कम तारीख बिल्कुल नहीं बढ़ाऊंगा। अगर अदालत में औसत मुकदमा खत्म करने की मियाद 20 साल है तो संविधान की कसम 20 साल से पहले मैं कोई केस खत्म ही होने नहीं दूंगा मुख्य बात यह है कि मैं न्याय हो चाहे ना हो, मगर कोई जनप्रतिनिधि तो क्या अगर कोई छुटभैया नेता भी जो कह देगा उसी के पक्ष में केस का फैसला लिख दूंगा, ऐसा लिखित आश्वासन देता हूँ। मैं न्याय क्षेत्र की बनी बनाई परंपराओं से कोई समझौता नहीं करूंगा, भले ही 100 गुनाहगार छूट जाए मगर बेगुनाहों को सजा दिलाए बगैर मैं चैन से नहीं बैठूंगा। जिस तरह गुंडे मवाली इत्यादि बैखौफ शहर में घूमते हैं और आम ईमानदार सीधा-साधा आदमी परेशान होता रहता है, आप विश्वास रखिए मेरे घर पर अदालत खोल लेने के बाद इन सब में कोई

कमी नहीं आएगी।

महोदय जी, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि सरकार को कर्मचारियों और अधिकारियों को वेतन देने में कितना खर्च आता है। मैं आपसे अदालत खोलने के लिए कोई वेतन नहीं लूंगा, बल्कि उल्टे में आपको हर माह, वार्षिक या अर्धवार्षिक या हर हफ्ता (इसे कोई गलत न समझिए यह लाइसेंस फीस है) देता रहूंगा। आखिर मैं भी तो अदालत में आने वाले मुकदमों, चोरों, लुटेरों इत्यादि से कमाऊंगा। महोदय जी, मेरे इस तरह अदालत खोलने से लोगों को न्याय मिलने में कोई भी जल्दी नहीं होगी इस बात की मैं गारंटी देता हूँ मगर इसे खोलने से आपको लोगों से आवश्यक सहानुभूति जरूर प्राप्त होगी क्योंकि आपने उनके लिए एक और संस्थान की स्थापना की है ताकि जल्दी मुकदमा निपट सके। (हालांकि निपटेंगे नहीं)

महोदय जी, मैं यह भी वादा करता हूँ कि मैं अधिकतर वकील, मुंशी, क्लर्क, दफ्तरी इत्यादि मेरी जान पहचान के और रिश्तेदार ही रखूंगा, ताकि ज्यादा से ज्यादा कमा सकूँ। वैसे तो मेरी अन्य कोई डिमांड या मांग नहीं है मगर क्योंकि मैं गलत फैसला दूंगा तो जनता दुश्मन बन जाएगी, मगर पुलिस प्रशासन, लाल पीली बत्ती वाली गाड़ी इत्यादि की अत्यंत आवश्यकता रहेगी। एक बार अदालत का ठेका (सारी लाइसेंस) मिलते ही अपने लिए बंगला गाड़ी तो मैं बना ही लूंगा। मेरा यह भी छोटा सा निवेदन रहेगा कि मैं जब फैसला दूँ तो कोई भी उस पर उंगली भी ना उठा पाए तथा मेरे खिलाफ कभी कोई जांच भी ना हो। प्राइवेट अदालत से नौकरियां और रोजगार बढ़ेंगे (यह बात और है कि सब की नियुक्तियाँ मैं अपनी पसंद से ही करूंगा और मेरी पसंद की नियुक्ति से सब तरह का लाभ अवश्य लूंगा)।

बचपन से ही न्याय कार्मिकों के ठाट-बाट, रहन-सहन, शानो-शौकत तथा किसी भी प्रकार की न्यायिक जिम्मेदारी का अभाव मुझे घर पर ही अदालत खोलने के लिए प्रेरित करता है। व्यवस्था का सबसे बड़ा फायदा है कि जिसको चाहे अंदर कर दो एक दिन के लिए या 1 महीने के लिए, कितना भी गलत फैसला दो आपको ताली ही मिलेगी, कोई प्रतिकार नहीं कर सकता। यह तो मेरे घरवालों और मेरी पत्नी के घर वालों की गलती है कि उनमें से कोई या उनका खास रिश्तेदारों में से कोई हाई प्रोफाइल न्यायिक रिश्तेदारी आदि नहीं है अन्यथा मुझे यह प्राइवेट अदालत खोलने की आवश्यकता नहीं पड़ती। महोदय जी,



बढ़ती जनसंख्या, मुफ्तखोरी, सांस्कारिक एवं नैतिक गुणों का अभाव, किसी भी कार्य को येन केन प्रकारेण पूर्ण करने की मानसिकता और अत्यन्त अल्प मेहनत और समय में अत्यधिक धन की आकांक्षा अपराधों को बढ़ावा दे रही है। तारीख पर तारीख, बढ़ती छुट्टियां और घटते न्यायिक मानदंड, इंसाफ को देरी से नाइंसाफी बना रही है। इसका एक मात्र विकल्प घर – घर अदालत है, कृपया अनुरोध पर विचार करके अनुग्रहित करें।

अत्यधिक अनुसंधान और सोच विचार से मैंने पाया है कि न्याय में देरी का कारण है एफ आई आर, प्राइवेट अदालत खोलते ही हम पुलिस को साफ निर्देश देंगे कि एफ आई आर ही ना लिखें और जहां तक संभव हो सके एफ आई आर को टालने का प्रयास करें। मैं किसी भी तरह का वेतन, तनखाह, पारिश्रमिक, पारितोषिक अथवा मानदेय इत्यादि की मांग नहीं करूंगा बस आम जनता को लूटकर ही अपने लिए दाल रोटी पनीर शनीर इत्यादि का इंतजाम कर लूंगा। मैं अपने सारे फैसले सरकार के पक्ष में ही दूंगा, बस रिटायरमेंट के बाद पद्मश्री या फिर किसी अच्छे खासे मालदार आयोग का सदस्य या फिर किसी राजनीतिक पार्टी का टिकट दिलवा दीजिएगा।

आदरणीय महोदय मेरा बचपन से ही सपना था कि अदालत भी मेरी होगी, जज भी मैं रहूंगा, वकील भी मेरा होगा, मुंशी, कानूनगो, मुहरिर, अर्दली, संतरी इत्यादि भी मेरे होंगे और फिर देखता हूं कि न्याय कैसे होता है। वैसे अगर अदालत खोल लेने के बाद आप हर महीने निश्चित रूप से दे दें तो फिर मैं आपसे केस की, काम की, मुकदमों की जिद नहीं करूंगा। आपने दीवानी और फौजदारी दो अलग-अलग अदालत बनाई है लेकिन मैं दोनों ही का काम अकेले सम्भाल लूंगा। अब तारीख पे तारीख देने के लिए क्या योग्यता और अनुभव की आवश्यकता होती है। दीवानी मामलों में तो मैं जितने को जमीन नहीं होगी उससे ज्यादा की तो कोर्ट फीस लगवा दूंगा। कोर्ट फीस, वकील, ट्रांसपोर्टेशन अदालत तक जाने के लिए, पेशगी, स्टॉप फीस इत्यादि में खर्च होगा तभी तो दुकानदारी अच्छे से चलेगी। अवैध कब्जा करने वाला भी खुश कि मुफ्त में उपभोग कर रहा हूँ और अदालत और किस्मत की कृपा रही तो कब्जा वाली जमीन भी मेरी हो जाएगी। और रही बात फौजदारी की तो तारीख पर तारीख देने के बाद तो विक्रिम को ही याद नहीं रहेगा कि उसके साथ क्या हुआ था फिर गवाह तो क्या ही याद रख पाएगा। हां और इतने सालों बाद जब विक्रिम ही सोचेगा कि क्या अदालत जाऊँ, तो गवाह तो शायद दूर से ही नमस्कार कर लेगा। कितना आसान तरीका है, शायद इसे ही प्राकृतिक

न्याय कहा गया है। प्रकृति द्वारा न्याय। मुझे अब समझ में आया कि तारीख पे तारीख देने का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक न्याय (समझौता, जबरन बल प्रयोग से कब्जा, गवाहों को धमका कर वश में कर लेना, ना मानने पर मार डालना इत्यादि) पहले में यह समझता था कि तारीख पर तारीख वकीलों की फीस और धंधा रोजगार चलता रहे, इसलिए बढ़ाई जाती है मगर अब समझ में आया कि यह प्राकृतिक नायक के सिद्धांत को जीवित रखने के लिए किया जाता है। बचपन में वकील बनने का सपना था मगर तब पता नहीं था कि केस सालों साल खिंचते जाते हैं। सोचते थे कि एक-दो केस में जीतेंगे तो क्या ही कमाई होगी। मगर तब प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का पता नहीं था और समझ भी ज्यादा नहीं थी। मेरे द्वारा बनाई व्यवस्था का ध्येय वाक्य चाहे सौ बेगुनाह जेल चले जाएं या अपराधी घोषित करार दिए जाएं मगर एक भी अमीर रसूखदार गुनहगार को सजा नहीं मिलनी चाहिए इस बात का मैं विशेष ध्यान रखूंगा। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि अगर आपने मुझे जज फ्रॉम होम बनाया तो लोगों का न्याय व्यवस्था पर थोड़ा सा जो विश्वास बचा है वह भी उठ जाएगा। इसका दूरगामी प्रभाव यह पड़ेगा कि लोग आपस में ही मारपीट कर मुद्दे सुलझा लेंगे और न्याय व्यवस्था पर भार बहुत कम हो जाएगा।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि महोदय जी उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मुझ अकिंचन को घर में ही अदालत खोल कर चलाने की अनुमति देने की महान कृपा करें, जिसके लिए जो भी लाइसेंस फीस निर्धारित की जाएगी वह मैं देने के लिए तैयार हूँ। अगर आपकी महान कृपा हो जाती है तो हम निश्चित ही घर – घर अदालत हर घर बगावत का सपना साकार कर सकते हैं। धन्यवाद।

पुनश्च : उपरोक्त लेख काल्पनिक है जिसका किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है। यह चाय नामक मादक पेय की खुमारी में लिखा गया है जिसका किसी भी व्यक्ति घटना आदि से संबंध पूर्णतः संयोग माना जाएगा।

अनुराग कुमार श्रीवास
सीनियर सेक्शन इंजी. (ट्र.सं.)
गाडरवारा, जबलपुर मंडल
पश्चिम मध्य रेलवे



लेख

एच.आर.एम.एस. की उपयोगिता

HRMS रेलवे परिचय :

HRMS (Human Resource Management System) की शुरुआत रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और सीईओ द्वारा 26 नवंबर, 2020 को भारतीय रेलवे में की गई थी। भारतीय रेलवे में कर्मचारियों के सेवा से सम्बंधित आंकड़े एवं उन्हें मिलने वाली सुविधाओं के डिजिटलीकरण में HRMS (Human Resource Management System) का शुभारंभ बहुत ही महत्वपूर्ण एवं मील का पत्थर साबित हुआ है।



HRMS की उपयोगिता क्या है :

- HRMS रेलवे प्रशासन और कर्मचारियों के बीच एकल खिड़की संचार प्रणाली का कार्य करता है। अब, कर्मचारी अपनी सेवा से संबंधित आंकड़े HRMS के माध्यम से online देख सकते हैं और यदि आवश्यक हो, तो कर्मचारी किसी भी data/information बदलाव के लिए सम्बंधित रेलवे प्रशासन के साथ ऑनलाइन संवाद कर सकते हैं।
- HRMS के क्रियान्वित होने से रेल कर्मचारी को सेवा संबंधी किसी भी अनुरोध के लिए कार्मिक शाखा क्लर्क से मिलने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ऐसे सभी अनुरोध जैसे e-Pass / PTO के लिए आवेदन, PF की अग्रिम निकासी, e-APAR (Annual Performance Assessment Report) जमा करना, सेवा रिकार्ड संबंधी शिकायत दर्ज करना आदि घर बैठे अपने मोबाइल से online किये जा सकते हैं।
- HRMS कर्मचारियों को रेलवे में शामिल होने की तारीख से लेकर वर्तमान डेटा को देखने की अनुमति देता है, जिसमें उनकी वेतन वृद्धि, पदोन्नति, पुरस्कार, स्थानान्तरण, पोस्टिंग, छुट्टी, प्रशिक्षण, और परिवार के सदस्यों का विवरण, और सेवानिवृत्ति लाभों के लिए नामांकन से सम्बंधित विवरण शामिल हैं। यह जानकारी पहले कर्मचारियों के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं थी, HRMS प्रशासन में पारदर्शिता लाने में मदद कर रहा है।

HRMS ESS से स्वयं डाटा संशोधन कैसे करें :

- IRHRMS ESS पर क्लिक करने के बाद व्यू/एडिट माई डिटेल पर जाये यहाँ पर एक Dropdown मेनू मिलेगा।
- Dropdown लिस्ट में सर्वप्रथम Basic Information टैब खुलेगा इसके उपरांत Raise Change Request पर क्लिक करें अब आपके Basic Information में Correction का Option खुल जाएगा। प्रदर्शित हो रहे

आपके सेवा विवरण के सामने बहुत छोटे-छोटे बॉक्स दिखाई देंगे जिन पर क्लिक करने के बाद उस विवरण को सही करने का विकल्प आपके पास होगा।

- Basic Information के बाद बारी-बारी से सभी टैब को खोलकर उपरोक्त अनुसार अपने तथा परिवार के विवरण को सही कर सकते हैं, कमचारी के जितने Family Member है उतने ही Family member tab show होंगे। जैसे:- Family -1 Family -2 Family -3 Family -4
- कमचारी द्वारा पोर्टल के उक्त टैब पर अपना तथा अपने परिजनों के PAN Card, AADHAR Card, Date of Birth Proof, Marriage/Divorce/Death Certificate Member Dependent Doc, Member Bonafide Doc तथा फोटो (फोटो 256 kb) अपलोड करने का विकल्प है।
- कमचारी द्वारा सही किये गये विवरण सम्बंधित सेवा रिकार्ड लिपिक द्वारा स्वीकार कर, स्वीकृति देने वाले सक्षम अधिकारी को अग्रेषित किया जायेगा स्वीकृति अधिकारी द्वारा स्वीकृति प्रदान करने के बाद कमचारी के सभी विवरण HRMS पर सही दिखने लगेंगे।

HRMS login पासवर्ड भूल गए तो क्या करें :

- यदि कोई कर्मचारी HRMS की बनाई हुई password भूल गए है तो निम्न प्रक्रिया अपनाये -
- HRMS लॉगिन स्क्रीन खोलें
- चुनें - Forgot Password
- अपना - HRMS Emp Id दर्ज करें
- क्लिक करें - Send OTP पर
- अपने पंजीकृत मोबाइल में प्राप्त 5 अंकों का OTP दर्ज करें
- "Reset Password" पर क्लिक करें
- नया पासवर्ड बनाएँ और पुष्टि करें।

HRMS में सेवानिवृत्त कर्मचारी मोबाइल नंबर परिवर्तन करना:

- <https://hrms-indianrail-gov-in/HRMS/> वेबसाइट पर जाएं।
- Retired Employee Mobile Change लिंक पर क्लिक करें।
- पेशन भुगतान आदेश संख्या (पी.पी.ओ. नंबर) जन्मतिथि भरकर go करें।
- प्रदान की गई HRMS id तथा मोबाइल नंबर प्रदर्शित होगा।

- नए मोबाइल नंबर के लॉग-इन पेज पर दिये गए लिंक पर क्लिक करे उपलब्ध फार्म को भरकर संबंधित पास क्लर्क को जमा करें।
- पास क्लर्क पी.पी.ओ. का सत्यापन कर मोबाइल नंबर स्वीकार करें।

सेवानिवृत्त कर्मचारी के लिए e-Pass :

- पास लिपिक को सेवानिवृत्त कर्मचारी की निम्नलिखित जानकारी भरनी चाहिए।
- पी.पी.ओ. नंबर डालें अथवा रेलवे/मण्डल/कारखाना जन्मतिथि के आधार पर कर्मचारी का पता लगाएँ।
- अनिवार्य विवरण दर्ज कर दस्तावेज अपलोड करते हुए Submit करें।
- सेवानिवृत्त कर्मचारी पास लिपिक द्वारा दर्ज की गई जानकारी की पुष्टि करें।
- पास जारीकर्ता प्राधिकारी (PIA) पास लिपिक द्वारा प्रस्तुत विवरण को चेक करते हुए स्वीकार अथवा वापिस कर सकता है।

HRMS फर्जी वेबसाइट व पासवर्ड के प्रति सजगता :

- भारतीय रेलवे की ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट सिस्टम (एचआरएमएस) नाम की मिलती जुलती फर्जी वेबसाइट ने रेलवे बोर्ड की चिंता बढ़ा दी है। बोर्ड ने सभी को सावधान करते हुए असली वेबसाइट का यूनिफार्म रिसोर्स लोकेटर (यूआरएल) (<https://hrms-indianrail-gov-in/HRMS>) जारी किया है। जिन (अधिकारी और कर्मचारी) ने अपने लागिन पासवर्ड लापरवाही या भूलवश फर्जी वेबसाइटों पर साझा कर दिया है, वो एचआरएमएस में गड़बड़ी का कारण बन सकते हैं।
- दरअसल, कुछ कर्मचारी अवकाश और सुविधा पास आदि लेने के लिए अपने एचआरएमएस एप्लीकेशन का उपयोग दूसरे व्यक्ति से कराते हैं। कुछ साइबर कैफे भी पहुंच जाते हैं। इसे जानकारी का अभाव कहें या अज्ञानता वे एचआरएमएस के फर्जी वेबसाइट पर भी अपना लॉग इन पासवर्ड आदि साझा कर देते हैं और आनलाइन अवकाश व सुविधा पास आदि के लिए परेशान रहते हैं। भारतीय रेलवे का असली एचआरएमएस वेबसाइट और एप्लीकेशन के हैक होने या डाटा चोरी होने की आशंका बढ़ गई है। इसलिए रेलवे बोर्ड ने सभी को सावधान करते हुए असली वेबसाइट का यूनिफार्म रिसोर्स लोकेटर (यूआरएल) (<https://hrms-indianrail-gov-in/HRMS>) जारी किया है।

- एचआरएमएस के एनुअल परफार्मेंस अप्रैजल रिपोर्ट (एपीएआर) माइयूल के लागिन पृष्ठ पर एक लिंक प्रदान किया गया है, जो उपयोगकर्ताओं को एचआरएमएस एप्लीकेशन के सही यूआरएल (<https://hrms-indianrail-gov-in/HRMS>) पर ले जाएगा।
- रेलवे ने कर्मचारियों को फर्जी एचआरएमएस साइटों के प्रति सुरक्षा हेतु आगाह किया है अत्यधिक सावधानी के साथ किसी भी दुरुपयोग को रोकने के लिए अपने लागिन पासवर्ड को तुरंत बदले। एचआरएमएस प्रणाली में लाग इन करने के लिए सही यूआरएल का उपयोग करने के लिए सभी कर्मचारियों को जागरूक करें। साथ ही बताएं की किसी भी परिस्थिति में एचआरएमएस प्रणाली में लाग इन करने के लिए अन्य यूआरएल का उपयोग न करें।

HRMS रेलवे से सम्बन्धित प्रश्न :

- प्रश्न – HRMS का विस्तार रूप क्या है?
उत्तर – Human Resource Management System
- प्रश्न – HRMS portal की आधिकारिक वेबसाइट क्या है?
उत्तर – hrms.indianrail.gov.in
- प्रश्न – क्या HRMS ID बदला जा सकता है?
उत्तर – HRMS ID को बदला नहीं जा सकता है, अगर चाहे तो केवल पासवर्ड बदल सकते हैं।
- प्रश्न – HRMS का निर्धारित password क्या है?
उत्तर – HRMS का निर्धारित password Test/123 है, जिसे पहली Login के बाद सुरक्षा के लिए बदल देना चाहिए।
- प्रश्न - HRMS में स्वहपद (लॉगिन) करने का नया लिंक क्या है?
उत्तर - <https://hrms-indianrail-gov-in/HRMS/>

HRMS सॉफ्टवेयर भारतीय रेलवे के लिए एक बहुत बड़ा कदम है, जो न केवल प्रशासनिक कार्यों को सरल बनाता है, बल्कि कर्मचारियों की संतुष्टि और कार्यकुशलता को भी बढ़ा रहा है।

गुलाब चन्द गुर्जर
कार्यालय अधीक्षक
मडिमका, कोटा, पमरे



लेख

ऑपरेशन सिंदूर और उसके वैश्विक प्रभाव

भूमिका: भारत की चेतना और जागृत राष्ट्र- इतिहास केवल तारीखों और युद्धों का संग्रह नहीं होता, वह उन हृदयों में लिखा जाता है जो जागते रहते हैं, जब पूरा राष्ट्र सो रहा होता है। सीमाओं पर संकट की घड़ी में भारत ने उठाया कदम शांत, संयमी और अडिग। इस कदम का नाम था 'ऑपरेशन सिंदूर'। यह केवल सैन्य अभियान नहीं था, बल्कि भारत की आत्मा की पुकार थी, जो सदियों से कहती आई है, "शांति हमारी वृत्ति है, पर अधर्म के समक्ष मौन पाप है।"

सिंदूर, केवल लाल रंग नहीं, यह शक्ति रक्षा और सृजन का प्रतीक है। जब राष्ट्र इसे अपने मस्तक पर धारण करता है, तो वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए उठ खड़ा होता है। ऑपरेशन सिंदूर इसी संकल्प का प्रति रूप था, जिसमें सैनिक का साहस और नीति-निर्माता की दूर दृष्टि एक हो गई। भारत सदैव शांति का पुजारी रहा है, किंतु वह जानता है कि शांति की रक्षा बिना सामर्थ्य के नहीं होती। 'ऑपरेशन सिंदूर' को इन पंक्तियों में परिभाषित किया जा सकता है-

भारत माँ के मस्तक पर, अमिट-अमर निशानी है।

ये साहस शौर्य समर्पण वाले वीरों की जवानी है।।

बीस मिनट में ध्वस्त किए, दहशत के ठिकानों को,

जो बारूद बन के दहका है, ये सिंदूर की वो निशानी है।

शक्ति, नीति और विज्ञान का संगम- सन् 2025 के मई में जब सीमापार से आतंक की साजिशें बुनी जा रही थीं, घाटियों में बारूद की गंध और नफरत का धुआँ फैल रहा था, भारत ने निर्णायक कदम उठाया 'ऑपरेशन सिंदूर' यह कोई उन्मादपूर्ण आक्रोश नहीं था, बल्कि संतुलित प्रतिकार था। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा "युद्धयस्वविगतज्वरः" बिना क्रोध और भय के धर्म के लिए युद्ध करो। यही भाव भारत के नेतृत्व और सेना दोनों में दृष्टिगोचर हुआ। इस अभियान में तकनीकी शक्ति का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। उपग्रहों की दृष्टि ने सीमापार का सच दिखाया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने रणनीति को धार दी, और हमारे वीर जवानों ने उस रणनीति को साहस में बदल दिया। यह आधुनिक भारत की वही तस्वीर थी जिसमें विज्ञान और वीरता एक साथ खड़े हैं।

ISRO ने सैटेलाइट-डेटा उपलब्ध कराया और 400 से अधिक वैज्ञानिकों का इसमें योगदान रहा। इससे स्पष्ट है कि स्पेस सक्षम सर्विलांस अब राष्ट्रीय अभियानों का अभिन्न हिस्सा बन गया है।

सैनिकों की मानव-केंद्रित भूमिका- सैनिकों के लिए यह आदेश का पालन नहीं, बल्कि राष्ट्र के प्रति प्रेम और समर्पण था। उन्होंने रातें जागकर बिताई, अपने प्राणों को परखते हुए, केवल यह सुनिश्चित किया कि निर्दोष की कोई हानि न हो। उनके चेहरे पर संयम और साहस दोनों झलकते थे। ऑपरेशन सिंदूर ने यह दिखाया कि-युद्ध केवल शक्ति नहीं, सहानुभूति और विवेक का भी विषय है। हमने सिर्फ निशाने नहीं, विश्वास की रक्षा की है। हमारी हर गोली, हमारी हर रणनीति, केवल अधर्म को रोकने के लिए है। यह युद्ध हमारे लिए राष्ट्र और मानवता दोनों की रक्षा है।

ऑपरेशन सिंदूर नारी शक्ति के स्वाभिमान का प्रतीक बन गया है, ये नए भारत का नया स्वरूप है-

भारत माँ के भाल का ये, सवाल बन जाता है।

आतंकी तलवारों के आगे, ठाल बन जाता है।

माथे के सिंदूर की जब लाज लुट जाती है,

तो लाल रंग दुश्मनों का काल बन जाता है।

सैन्य-प्रशिक्षण और रणनीतिक सबक- विशेषज्ञ मानते हैं कि ऑपरेशन सिंदूर ने भारत की तैयारी, लक्ष्य चयन और समन्वय की क्षमता दिखायी वायु, मिसाइल, ड्रोन और गुप्तचर व्यवस्था का एक बेहतरीन संयोजन है। ISRO के वैज्ञानिकों ने 24 घंटे सतत कार्य किया। ड्रोन, AI, साइबर सुरक्षा और सैटेलाइट ये आधुनिक अस्त्र थे, पर इन के पीछे वही मानवीय सोच और विवेक था जो भारत की संस्कृति की नींव है। विज्ञान भारत का शस्त्र बन चुका है।

वैश्विक प्रभाव और कूटनीति - ऑपरेशन सिंदूर को केवल युद्ध की दृष्टि से देखना अनुचित होगा। यह केवल एक विचार ही नहीं अपितु अभियान था, जो भय और अस्थिरता को राजनीति का शस्त्र बनाने के विरुद्ध था। भारत ने एक नई रणनीति प्रस्तुत की "संतुलित प्रतिशोध"। इसका अर्थ है कि जवाब दिया जाए, पर नियंत्रण के साथ य शक्ति दिखाई जाए, पर संयम के साथ। यही संतुलन एक प्राचीन सभ्यता को आधुनिक महान राष्ट्र बनाता है।

इस अभियान में भारत की आत्मनिर्भरता स्पष्ट हुई। AI आधारित विश्लेषण, स्वदेशी उपग्रहों से वास्तविक समय की निगरानी, और वैज्ञानिकों की सहभागिता इस बात का प्रमाण था कि भारत अब किसी पर निर्भर नहीं है। हमने बता दिया उनको जो यह सोचते थे कि-

**शांति के पुजारी हम, केवल गाँधी वाले है।
अंगारों पे चलने वाले, हमतो आँधी वाले है।**

दूसरी ओर, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने भारत के कदम को गंभीरता से लिया। अमेरिका, रूस, फ्रांस और अन्य देशों ने भारत के संयम की प्रशंसा की। भारत ने यह सिद्ध किया कि संयमित शक्ति का प्रयोग केवल धमकी नहीं, बल्कि सुरक्षा और नीति का संतुलन है। विश्व-नेताओं ने शांति पूर्ण समाधान और संयम की अपीलकीय परन्तु ऑपरेशन ने भारत की एक तीव्र-संदेश कौशल भी प्रदर्शित की। कई विश्लेषक इसे भारत की नई रणनीतिक छवि के रूप में देखते हैं। इसका प्रभाव यह होगा कि –

1. दक्षिण एशिया में सुरक्षा दृष्टि का पुनः-निर्धारण पड़ोसी राज्यों की रणनीतियाँ बदलेंगी या छोटे-स्तरीय संघर्षों के साथ शोर गुल बढ़ेगा।
2. रक्षा-उद्योग व आत्मनिर्भरता- ढाँचेका बल ऑपरेशन के बाद घरेलू रक्षा – उद्योग को बढ़ावा मिलेगा।
3. स्पेस/AI/ साइबर में निवेश अनिवार्य राष्ट्रीय सुरक्षा अब इन्हीं क्षेत्रों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी है।

दार्शनिक और साहित्यिक आयाम- सिंदूर केवल लाल रंग नहीं, यह शक्ति, रक्षा और सृजन का प्रतीक है। भारत ने इसका नाम इसी प्रतीक के अनुसार रखा। उप निषदों में कहा गया-

“यदायदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानसृजाम्यहम्।”

जब धर्म ग्रासित होता है और अधर्म बढ़ता है, तब भारत उठता है। ऑपरेशन सिंदूर इसका जीवंत प्रमाण है।

भावनात्मक और मानव-केंद्रित दृश्य- सैनिकों के पीछे परिवार था, उनके निर्णय के पीछे अनेक जिंदगियाँ। सैनिकों ने अपने डर और चिंता को छिपा कर केवल राष्ट्र की रक्षा की। ऑपरेशन सिंदूर ने यह दिखाया कि युद्ध का असली मूल्य केवल नष्ट करने में नहीं, मानवता की रक्षा में है।

भविष्य की चुनौतियाँ- भविष्य में युद्ध साइबर और अंतरिक्ष में होंगे AI हथियार बनेंगे, डेटा कवच का कार्य करेंगे। भारत को तकनीकी तैयारी के साथ नैतिक नेतृत्व भी देना होगा।

समापन: शौर्य और शांति का संदेश- ऑपरेशन सिंदूर ने यह दिखाया कि भारत केवल सीमा का रक्षक नहीं, संपूर्ण मानवता

का प्रहरी है। यह अभियान केवल युद्ध का नहीं, बल्कि मानवता, धर्म, और नीति का स्मारक है। स्वामी विवेकानंद का संदेश “उठो, जागो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।” आज फिर जीवंत हो उठा

आज का भारत वही है जिसने बुद्ध की करुणा और छत्रपति शिवाजी की वीरता दोनों को आत्मसात किया है। ऑपरेशन सिंदूर ने उस भारत की छवि जगाई जो विज्ञान में अग्रणी, नीति में उदात्ता और शौर्य में अद्वितीय है। भारत की आत्मा अमर है। यह वही भारत है जो हर युग में कहता है “सत्यं वद, धर्मं चर।”

ऑपरेशन सिंदूर इस सत्य का साक्षी है कि भारत आज भी वही है जो विश्व को शांति देना चाहता है, पर यदि आवश्यकता पड़ी, रणभूमि में भी उतरने से नहीं हिचकेंगे। यही भारत की पहचान है। विश्व आज असंतुलन के युग में है युद्ध और शांति के बीच झूलता। ऐसे समय में भारत ने सिखाया कि शांति की रक्षा शौर्य से होती है।

“वसुधैव कुटुम्बकम्” – भारत का आदर्श आज भी वही है, पर वह परिवार का रक्षक भी स्वयं है। “आपरेशन सिंदूर” ने यह प्रमाणित किया कि आधुनिकता और परंपरा, शक्ति और नीति, विज्ञान और धर्म ये विरोधी नहीं, परस्पर पूरक हैं। यह अभियान इतिहास की मिट्टी पर अंकित रहेगा एक स्मृति-शिला की तरह, जिस पर लिखा है-

**“यह भारत है जो जब झुकता है, तो करुणा से,
और जब उठता है, तो धर्म की रक्षा के लिए।”**

यथा-

**“धर्मो जयति नाधर्मः, सत्यं जयति नानृतम्।
भारतस्य शौर्यम् अमृतम्, यतः सिंदूरवत् सदा शोभते।”**

जय हिन्द जय भारत

राकेश कुमार मालवी
सीनियर सेक्शन इंजीनियर(टेली)
भोपाल मंडल, पमरे



लेख

रिश्तों की एक नई कहानी

आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में हम सब अपने कामों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि अपनों के लिए ही समय निकालना मुश्किल हो गया है। दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलना तो दूर, कभी-कभी यह सोचने में भी हिचक होती है कि हमारे जाने से कहीं उन्हें कोई असुविधा न हो। इन्हीं ख्यालों में उलझे हुए, हम अक्सर चाहते हुए भी एक-दूसरे से मिल नहीं पाते हैं।

बिखरे रिश्तों को जोड़ता एक नन्हा धागा- बचपन की यादें भी क्या खूब थीं! हम एक संयुक्त परिवार की तरह रहते थे, जहाँ त्योहारों पर नाना-नानी के घर सभी का जमावड़ा लगता था। कोई भी पढ़ाई या ऑफिस के काम का बहाना बनाकर इस मिलन से नहीं बचता था। हमारा बचपन एक ही कॉलोनी में, मौसी, मम्मी और हम सब बच्चों के साथ एक-दूसरे के घर आते-जाते बीता। वीकेंड पर बाहर जाने की बजाय घर पर ही महफिलें सजती थीं और हम सब मिलकर खूब मस्ती करते थे।

लेकिन समय बदला और करियर की तलाश में हम सब अलग-अलग शहरों में बस गए। इसी बीच मेरा विवाह हुआ और मेरे जीवन में मेरे पुत्र 'चित्रांश' यानी हमारे प्यारे 'डुग्गू' का आगमन हुआ। डुग्गू मानो हमारे बिखरे हुए परिवार को फिर से जोड़ने वाली एक कड़ी बन गया। उसी के बहाने हम सब एक बार फिर इकट्ठा होने लगे और वो पुराने दिन लौट आए।

एक अनियोजित यात्रा जो किस्मत को थी मंजूर - कई दिनों से मेरी अपनी बहन से मिलने की बहुत इच्छा हो रही थी, लेकिन मन में वही पुरानी दुविधा थी कि कहीं मेरे जाने से उसकी व्यस्त दिनचर्या में कोई परेशानी न हो। मैंने ऑफिस से छुट्टियाँ लेकर हरिद्वार जाने की योजना बनाई थी, लेकिन जैसे ही बहन का पुणे आने का संदेश मिला, मैंने तुरंत हरिद्वार का प्लान रद्द कर दिया, क्योंकि कई दिनों से मेरे मन में भी अपनी बहनों से मिलने की तीव्र इच्छा थी। बहन के बुलावे ने मेरी इस इच्छा को पूरा करने का अवसर दे दिया और हम पूरे उत्साह के साथ पुणे जाने की तैयारियों में जुट गए।

मस्ती भरा सफर और पुणे में स्वागत- जब भाई-बहन इकट्ठे होते हैं, तो उसकी खुशी अनमोल होती है। हमने सुबह दानापुर पुणे एक्सप्रेस पकड़ी और डुग्गू की बुआओं से मिलने निकल पड़े। सफर लंबा था और गाड़ी थोड़ी लेट भी हो गई थी, लेकिन हमारे साथ हमारा प्यारा भतीजा डुग्गू था, जिसकी शरारतों ने समय के गुजरने का पता ही नहीं चलने दिया।

ऐसे ही हँसी-मजाक के बीच हम इटारसी पहुँचे। यहाँ ट्रेन का

स्टॉपेज अधिक समय का था, तो हमें स्टेशन पर उतरने का मौका मिला। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि स्टेशन पर भारतीय रेलवे द्वारा यात्रियों के लिए कितनी शानदार व्यवस्था की गई थी। खाने-पीने के लिए बहुत सारे विकल्प उपलब्ध थे फलों के स्टॉल से लेकर गरमागरम भोजन तक, हर तरह की चीजें मौजूद थीं। हमने भी आगे के सफर के लिए कुछ फल और स्नैक्स खरीदे जो हमारे सफर में काम आए। ट्रेन जब इटारसी से आगे बढ़ी तो खिड़की से बाहर के मनोरम दृश्यों ने मन मोह लिया, जिससे यात्रा का आनंद और भी बढ़ गया। हम डुग्गू की मस्ती का आनंद लेते हुए सुबह 6 बजे पुणे पहुँच गए।

स्टेशन से कैब लेकर जब हम घर पहुँचे, तो हमारी और डुग्गू की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। मुझे यकीन था कि ये कुछ दिन हमारे जीवन के सबसे यादगार पल बनने वाले हैं।

घर का खाना और यादगार पल - मैंने पहले ही दिन अपनी बहनों को साफ कह दिया था कि हम घूमेंगे कहीं भी, पर खाना घर पर ही खाएंगे, क्योंकि हममें से कोई भी उनके हाथ के बने स्वादिष्ट खाने का एक भी मौका नहीं छोड़ना चाहता था। उन्होंने भी हमारी इस इच्छा का पूरा मान रखा। फिर तो बचपन की यादों को ताजा करते हुए इडली, ब्रेड रोल, सूजी के चीले, आम का पन्ना और कोल्ड कॉफी जैसे कई पसंदीदा पकवानों का दौर चला।

डुग्गू की मस्ती के साथ पुणे के ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल हालांकि गर्मी अधिक थी, पर हमने पहले से ही घूमने के लिए कुछ बेहतरीन जगहों को चुन रखा था और हर दिन के लिए एक स्थान तय था।

1. सिंहगढ़ का किला (Sinhagad Fort): हमारी यात्रा की शुरुआत इस ऐतिहासिक किले से हुई। पुणे शहर का यह गौरवशाली किला सह्याद्री की पहाड़ियों पर स्थित है। किले पर चढ़ाई करते हुए डुग्गू की ऊर्जा देखने लायक थी। वह हर छोटे-बड़े पत्थर को पार करने की कोशिश करता और उसकी खुशी हमें और उत्साहित करती थी। यहाँ से दिखने वाला विशाल और मनोरम दृश्य किसी भी थकावट को मिटा देने वाला था।

2. आगा खां पैलेस (Aga Khan Palace): हमने इतिहास के पन्नों को पलटने के लिए आगा खां पैलेस का दौरा किया। यह पैलेस न सिर्फ अपनी इतालवी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसका संबंध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, विशेष रूप से महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी से जुड़ा है। डुग्गू के लिए यह

बड़ा मैदान किसी खेल के मैदान से कम नहीं था। विशाल लॉन में दौड़ते हुए डुग्गू ने बहुत मस्ती की, मानो वह भी इतिहास के इस भव्य स्मारक का हिस्सा बन गया हो।

3. दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर (Dagdusheth Halwai Ganapati Mandir): अगले दिन हम पुणे के सबसे पूजनीय स्थल, श्रीमंत दगडूशेठ हलवाई गणपति मंदिर पहुँचे। भगवान गणेश की भव्य और दिव्य मूर्ति का दर्शन कर मन को असीम शांति मिली। मंदिर की वास्तुकला और उसका सुनहरा रूप अत्यंत आकर्षक था। भीड़ के बावजूद, हमने बप्पा का आशीर्वाद लिया और डुग्गू को बप्पा के बारे में कहानियाँ सुनाई।

4. इस्कॉन मंदिर (ISKCON Temple): हमने कात्रज स्थित इस्कॉन मंदिर (NVCC) की यात्रा भी की। यह मंदिर अपनी शांति और भव्यता के लिए जाना जाता है। मंदिर परिसर में डुग्गू ने हरे कृष्ण संकीर्तन में खूब तालियाँ बजाई और उसकी मासूमियत से भरी शरारतें और भक्ति देखकर हम सब बहुत प्रसन्न हुए। मंदिर की दिव्यता और शांति ने हमें कुछ देर के लिए संसार की भागदौड़ से दूर कर दिया।

5. स्वामीनारायण मंदिर (Swaminarayan Mandir): हमने शहर के प्रमुख स्वामीनारायण मंदिर का भी दर्शन किया। मंदिर की अद्भुत नक्काशी और शांत वातावरण हमें बहुत भाया।

6. भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग Bhimashankar Jyotirlinga-

हालांकि यह ज्योतिर्लिंग पुणे से थोड़ी दूर सह्याद्री पहाड़ियों में स्थित है, पर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक होने के कारण हमने यहाँ जाने का निश्चय किया। लंबी यात्रा और प्राकृतिक सौंदर्य से भरे इस स्थान पर पहुँचकर मन शांत हो गया। भीमाशंकर मंदिर की प्राचीन वास्तुकला और भीमा नदी का उद्गम स्थल देखना एक अद्भुत अनुभव था।

इसी बीच बुआओं द्वारा डुग्गू से पूछने पर नए कपड़े लेने के लिए और डुग्गू द्वारा तुरंत मना कर देना हमारी पूरी ट्रिप का सबसे यादगार पल था।

जब किस्मत ने दिया एक और दिन का तोहफा- छुट्टियाँ कब खत्म हो गईं, पता ही नहीं चला। किसी का भी वापस जाने का मन नहीं था। और फिर 'सोने पर सुहागा' यह हुआ कि हमारा रिजर्वेशन कन्फर्म नहीं हुआ, जिससे हमें साथ रहने के लिए एक और दिन मिल गया। लेकिन अगले ही दिन रिजर्वेशन कन्फर्म हो गया और हमें न चाहते हुए भी वापस आना पड़ा।

हम जबलपुर के लिए निकल पड़े, लेकिन इस बार हमारे

साथ डुग्गू के फूले हुए गालों की मीठी यादें थीं। घर पहुँचकर दादी भी डुग्गू के गोल-मटोल गाल देखकर बहुत खुश हुईं और उन्होंने बुआओं को धन्यवाद दिया कि उन्होंने अपने भतीजे के गाल फुला दिए। अंत में, मैं यह जरूर कहना चाहूँगा कि डुग्गू के गाल केवल खाने-पीने से नहीं, बल्कि उस खुशी और प्यार से फूले थे जो उसे अपने परिवार के साथ मिलकर मिली। यही तो जीवन है, जहाँ सुख-दुःख में परिवार ही एक-दूसरे का सहारा बनता है।

अनुराग पटेल
मुख्य सतर्कता निरीक्षक
सतर्कता विभाग
मुख्यालय, पमरे



कविता

माँ

माँ मैं तुम्हारा ऋणी था, ऋणी हूँ, और ऋणी रहूँगा,
अब मैं दो पंक्तियाँ कविता के रूप में कहना चाहूँगा।

ऊँगलियाँ पकड़कर जिसने चलना सिखाया हो,
खुद भूखे रहकर मुझे खिलाकर सुलाया हो ॥

माँ तुम प्यार की सागर हो,
तुम ही दया की महासागर हो।

माँ तुम कड़ी धूप में छाया हो,
मैं धन्य हूँ जिसने तुम्हें पाया हो।

माँ तुम ही धरती हो, तुम ही आकाश हो,
जिसके बिना कुछ भी न विकास हो।

तुमको नाराज करना अक्षम्य भूल होगी,
तुम्हारी कदमों की मिट्टी स्वर्ग की धूल होगी।

माँ, मैं तुम्हारा ऋणी था, ऋणी हूँ और ऋणी रहूँगा।

नीरज कुमार
वरिष्ठ आशुलिपिक
वाणिज्य विभाग
मुख्यालय, पमरे



लघु कथाएँ

व्यवसाय

गगन के पिता के आकस्मिक निधन ने घर के प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित किया था। मुखिया पर निर्भरता चाहे वह रिश्तों की निर्भरता हो या आर्थिक निर्भरता हो सभी को उसे पहले जैसे करने में अथक प्रयास करने पड़ रहे थे। घर के बड़े पुत्र के रूप में गगन को पिता के व्यवसाय को न चाहते हुए भी अपनाना था ताकि आर्थिक रूप से लड़खड़ाये घर की स्थिति को ठीक किया जा सके और सभी की जरूरतों को समय पर पूरा किया जा सके।

गगन ने अपनी व्यथा को माँ से साझा किया कि वह पिता के व्यवसाय से उनके रहते हुए ही जुड़ना नहीं चाहता था और अब उनके न रहने पर वही व्यवसाय जो उनके परिवार की रोजी रोटी का माध्यम था, उसे अपनाने के लिए बाध्य न किया जाय।

माँ के लिए इस विकट स्थिति से उबरना बहुत मुश्किल हो रहा था। पति के निधन से चरमराई पारिवारिक स्थिति, सभी का धीरे-धीरे घर के बड़े बेटे गगन पर निर्भर होने की बढ़ती आदत और उस पर गगन का व्यवसाय में रूचि न लेना, माँ को कुछ भी सूझ नहीं रहा था कि गगन को कैसे समझाये कि उसके पिता के व्यवसाय में कोई बुराई या छोटोपन नहीं है। ये भी अन्य व्यवसाय, धंधा या दुकानदारी की तरह है, जिसे प्रकार कपड़ों की दुकान में कपड़े, बर्तनों की दुकान में बर्तन, खिलौनों की दुकान में खिलौने या मिष्ठान्न भंडार में मिठाईयां बिकती है।

अंततः आज गगन निरूपाय होकर बेमन से दुकान खोलने के लिए सुबह घर से खाना हुआ। काम पर जाते हुए गगन का उतरा हुआ चेहरा देख माँ उसे समझाने के लिए बहुत कुछ दिल में होने के बावजूद भी कुछ न बोल पाई क्योंकि कल रात ही अपने तर्क और अनुभव से गगन के मन में उपजे संदेहों को उसने दूर करने का भरसक प्रयास किया था और शायद वह सफल भी रही। गगन के छोटे भाई बहनों की पिछले दो सप्ताह से कोचिंग की फीस की बात बार बार गगन के सामने न रखने का निरर्थक प्रयास करते करते वह भी थक चुकी थी।

गगन ने दुकान का शटर खोलकर स्टैंड वाली खड़ी होर्डिंग दुकान के सामने रख दी ताकि दुकान के रास्ते में दूर दूर से ग्राहकों को दिख सके, यहां गमी का सामान मिलता है।

वर्चस्व

शहर में लकड़ियों के सामान के भव्य शोरूम की चर्चा चारों ओर थी। एक ही स्थान में मनुष्य के जीवन से जुड़ी लकड़ी की हर छोटी-बड़ी वस्तु इस शोरूम में मिल जाती थी। आस-पास के

गांवों और शहरों से भी लोग आवश्यकतानुसार लकड़ी की वस्तुएं खरीदने इस शोरूम में आते थे।

शांत नीरव वातावरण में एक रात अकस्मात् बंद शोरूम के हर विभाग के सदस्य आपस में बहस करने लगे। बच्चों वाले खंड से रंगीन, सजे हुए झूले, तीन पहिये वाली लकड़ी की गाड़ियां अपना गुणगान करते हुए मनुष्य के शैषव अवस्था से उनके प्रयोग किये जाने का बखान कर रही थी।

कुर्सी, मेज, डेस्क वाले खंड जीवन में शिक्षा के महत्व का वर्णन करते हुए स्वयं के महत्व पर ज्यादा प्रकाश डाल रहे थे कि उनके कारण ही छात्र जीवन में बच्चा निश्चित होकर तरक्की पाता है मानो बच्चे के क्षमता और योग्यता महत्वहीन है।

शोरूम के ड्राइंग रूम और किचन सेक्शन में तो शोरगुल कुछ ज्यादा ही हो रहा था। टीवी स्टैंड, कॉर्नर स्टूल, सेंटर टेबल, सोफे से लेकर रोटी बनाने के पटा-बेलन, परोसने के चम्मच, कलछी, छोटे छोटे स्टूल, पटे, चौकियां, डायनिंग टेबल सभी अपने अपने तर्क देकर दूसरों को ओछा दिखाने पर तुले हुए थे। एक किनारे पर रखी हुई आरामकुर्सियां स्वयं को घर के असहाय और निरूपाय बुजुर्गों जैसा महसूस कर घर के सदस्यों के बीच घमासान युद्ध को देख रहे थे।

असली रौनक तो शोरूम के विवाह वाले खण्ड की थी। नये नये तरीके के पॉलिश किये हुए पलंग, सोफा सेट, लकड़ी की नक्काशी से बने हुए काउच, अलमारी आदि फर्नीचर तो ऐसे सजे थे जैसे नववधू का दहेज सजा हो और शादी की तैयारियां शुरू करने की बस देर हो। पावन रिश्ते के उपरांत ही तुम लोगों को पूछा जायगा अन्यथा सबसे पहले तो हमारी जरूरत ही पड़ती है, ऐसा दंभ इस खंड की प्रत्येक वस्तुओं में कूट-कूट कर भरा दिख रहा था।

अहंकार में डूबे हुए प्रत्येक वस्तु का स्वयं की श्रेष्ठता को सिद्ध करने, मनुष्य के जन्म से उसका साथ निभाने का अहं भरा बहस रात भर चलता रहा। दूसरे दिन शोरूम का शटर नहीं खुला। शोरूम के मालिक का अचानक निधन हो गया और पगड़ी रस्म तक शोरूम बंद रखे जाने का निर्णय परिवार द्वारा लिया गया।

शोरूम में तराशी हुई सुसज्जित, सुशोभित वस्तुएं मुंह बाधें किये मालिक और ग्राहक की प्रतीक्षा में ऊंघती रही। वर्चस्व और श्रेष्ठता की बहस बंद हो चुकी थी क्योंकि उनके मालिक का साथ अंत समय में उन लकड़ियों ने दिया जिन्हें न तो रंगा गया

था, न ही तराशा गया था, न ही उन पर नक्काशी थी और न ही उन्हें किसी आकार में बदलकर विशेष उपयोग में लाये जाने के लिए कारीगर ने अपने हुनर का परिचय दिया था। उनमें अपने सामान्य रूप पर न तो हीनता के भाव थे न ही अपनी श्रेष्ठता पर गर्व था, वे दाह-संस्कार की लकड़ियां थी।

तेरहवीं

पिता के निधन के बाद पूरन के पास धन के अभाव में उनके समाज में प्रचलित नियमों के अनुसार पूरन तेरहवीं भोज की व्यवस्था नहीं कर पाया था। समाज के सभी नागरिकों के भोज के लिए पर्याप्त राशि नहीं होने से धन जुटाने के लिए उसके पास एकमात्र उपाय था, गांव के अन्य लोगों की तरह शहर में स्थित पटाखा बनाने के कारखाने में जाकर काम करना क्योंकि गांव उसे और उसके वयस्क होते दोनों बेटों चमन और गिरधर को रोजगार देने में सक्षम नहीं था।

तेरहवीं न कर पाने से समाज के किसी भी कार्यक्रम में उसका सपरिवार शामिल न हो पाना उसे खूब कचोटता था। अंततः निरूपाय सा वह, अपने दोनों बेटों और पत्नी को लेकर रोजी-रोटी की तलाश में शहर स्थित पटाखे बनाने के कारखाने में आकर काम करने लगे। लोगों के बीच कारखाने के अवैध होने संबंधी चर्चा उसने सुनी तो थी परंतु दो माह व्यतीत होने पर घर में चार लोगों के कार्य के एवज में प्राप्त होने वाली रकम से न केवल उसका गुजारा भली-भांति होने लगा था बल्कि गांव में छोड़ आये बड़ी बहू और अविवाहित पुत्री को भी गुजारे की राशि भेजने के बाद भी पिता की तेरहवीं के लिए बचत कर लेता था। आस इस बात की थी कि एक वर्ष के पहले यानि बरसी की तिथि के पूर्व ही वह समाज के नियमों के अनुरूप पिता की तेरहवीं मनाकर सामाजिक रूप से बहिष्कृत होने की पीड़ा से छुटकारा पा लेगा।

पिता के आकस्मिक निधन जैसी अनहोनी को फिर से होना था, पटाखे के कारखाने में भीषण आग लग गई जिसमें उस अवैध कारखाने में कार्यरत 85 मजदूरों में से 18 मजदूर जल कर मारे गये और मरने वालों में पूरन, उसकी पत्नी, एक बेटा चमन भी शामिल थे। अवैध कारखाने को सील कर पुलिस कारखाना मालिक को गिरफ्तार कर ले गई। पूर्ण रूप से जली लाशों के विभत्स रूप का दाह संस्कार हुआ और आज पूरन का छोटा बेटा परिवार के तीन सदस्यों को गंवाने का दुख भरा पहाड़ लेकर गांव लौट आया। उसे इस बात की तसल्ली थी कि सरकारी

मुआवजे से प्राप्त राशि से वह न केवल पांच माह पूर्व मृत अपने दादाजी का बल्कि अपने पिता, माता और बड़े भाई की भी तेरहवीं मनाकर समाज में शामिल हो जायगा।

सूतक

बंगले के सामने भीड़ देख मंजू साइकिल से उतर गई। उसे आशंका इस बात की हुई कि बंगले में रहने वाले बुजुर्ग बाबूजी नहीं रहे। मंजू इस बंगले में झाड़ू, पोंछा और बर्तन मांजने के काम करती है। तभी भीड़ में से उसे निर्मला भी आते हुए दिखी, जो इसी बंगले में खाना बनाने का काम करती है।

मंजू ने भौंहे उंची कर इशारों में ही निर्मला से प्रश्न किया जैसे पूछना चाह रही हो क्या हुआ।

“बाबूजी नहीं रहे”, निर्मला फुसफुसाते हुए बोली और दोनों बंगले में जुटने वाली भीड़ से बाहर आ गई। मंजू को मुहल्ले के तीन-चार और घरों में काम करना था।

मोबाईल ऑन कर समय देख कर मंजू बोली, “दीदी, साढ़े ग्यारह बज गये है तुम तो दोपहर का खाना भी बना चुकी होगी।”

“दोपहर के भोजन के लिए रोटी, सब्जी, दाल-चावल, पकौड़े वाली कढ़ी, कच्चे आम-पुदीने की चटनी बनाकर मैं सलाद काटने बैठी ही थी कि बाबूजी के कमरे से अम्माजी की चीख सुनाई पड़ी। भाभीजी ने जाकर देखा तो बाबूजी उल्टी कर बेसुध दीवार की ओर टकटकी लगाये आराम कुर्सी में लुढ़के पड़े दिखे।” निर्मला ने जवाब दिया।

भैयाजी कारखाने जा रहे थे, बीच रास्ते में ही खबर पाकर वापस आ गये है। बच्चे तो स्कूल में गर्मी की छुट्टी की वजह से घर पर ही है और दीदी भी इसी कारण से बच्चों को लेकर ससुराल से मायके आई हुई है। गांव में पैतृक खेती-बाड़ी संभाल रहे बड़े भैयाजी सपरिवार रवाना हो चुके है, उनके आने के बाद बाबूजी को अंतिम संस्कार के लिए ले जायेंगे। समाज का युवा वर्ग दो-तीन जानकार बुजुर्ग की निगरानी और मार्गदर्शन में अंत्येष्टि की तैयारी में जुटा हुआ था और दालान में टेंट हाउस से मंगाई गई प्लास्टिक की लाल कुर्सियां करीने से लगाई जा रही थी।

मुहल्ले के अन्य बंगलों का काम निपटा कर मंजू एक घंटे बाद बंगले में लौटी। गली में समाज से जुड़े लोगो की कारें खड़ी थी और घर - घर कचरा संग्रह करने के लिए कचरे वाली गाड़ी भी गली के एक छोर में आ खड़ी हुई और चालक ने तुरंत गाड़ी में बजने वाला गाना बंद कर दिया ताकि दिवंगत व्यक्ति की अंतिम

यात्रा शांतिपूर्वक निकल सके। अर्थी को बाबूजी के पुत्रों और नाती-पोतों द्वारा कंधा दिया गया, राम नाम की गूंज के बीच में अम्माजी का करुण विलाप भी सुनाई दे रहा था।

मुहल्ले और समाज के पुरूष वर्ग के श्मशान घाट की खानगी के बाद बंगले में एक नीरवता छा गई। आस-पड़ोस की महिलायें भी अपने अपने घरों की ओर खाना हो चुकी थी।

अचानक भाभीजी ने मंजू को आवाज दी “दोपहर के भोजन के लिए पूरा खाना बना रखा है। अब सूतक वाले घर में कोई न खायेगा, तू ले जायगी क्या सब कुछ तो डब्बे में भर ले नहीं तो कचरेवाली गाड़ी को रोकना यदि कचरा उठाने वाला भैया ले जाय तो अच्छा अन्यथा गाड़ी में सारा कुछ फेंक देना।”

जिस भोजन को बड़े चाव से घर के सभी सदस्यों के लिए कुछ समय पूर्व बनाया गया था, वही भोजन किसी एक सदस्य के निधन के बाद अशुद्ध या अपवित्र कैसे हो गया ? क्या उसी प्रकार जैसे परिवार का एक प्यारा सदस्य निधन के बाद मिट्टी कहलाता है या पढ़े-लिखे लोग जिसे बॉडी कहते हैं और मिट्टी घर से निकालने के लिए उतावले हो जाते हैं। इसी पशोपेश में मंजू स्टोर रूम से पैकिंग डब्बे निकालने चली गई।

प्रार्थना सभा

पूरे हॉल में वातावरण एक दम शांत है। हॉल के एक कोने में एक समूह रामधनु प्रस्तुत कर रहा है और सभा में आने वाले बीच में रखे विशाल फोटो को प्रणाम कर, पुष्प अर्पित कर एक कतार में बैठते जा रहे हैं। हॉल के दांये तरफ शोक में डूबा पूरा परिवार बैठा हुआ है। दिवंगत व्यक्ति को सफेद फूल बहुत पसंद है इसलिए पुष्पहार, फूलों से लेकर परिवार के सदस्यों के परिधान तक चारों तरफ सफेद-सफेद नज़र आ रहा है।

इस शांत वातावरण में भी समूहों में अशांति महसूस हो रही है। परिवार में पारिवारिक व्यवसाय को अपने नियंत्रण में लेने की होड़ सी लगी है तो आधे से अधिक लोग इस चिंता में हैं कि अब परिवार का क्या होगा, क्या सभी लोग संयुक्त रूप से रह सकेंगे। समाज के लोगों को जवान होते बेटे और बेटों में अपने भावी दामाद और बहू की छवि नज़र आ रही है।

शाम की बैठक में साथ में अच्छा समय गुजारने वाले कई मित्र आज अपनी-अपनी झूठी व्यस्तता के कारण नहीं आ पाये हैं। एक ही फोन करके प्लान कर सभी दोस्त चाहे व्यवसायी हो

या नौकरीशुदा, सभी मिलकर बैठक में भाग लेते हैं अपना सुख-दुःख साझा कर लेते हैं परंतु आज इतने महत्वपूर्ण सभा में बैठने कुछ मित्र नहीं आ पाये हैं।

समाज के विभिन्न समुदाय, विभिन्न व्यापारी संगठन, स्थानीय पार्षद के द्वारा शोक संदेश पढ़े जाने के उपरांत अभिन्न मित्रों और परिवार के वर्तमान बुजुर्ग के द्वारा कुछ संस्मरण सुनाये गये। इसी दौरान कहीं कहीं से फुसफुसाहट की आवाजें भी आने लगी हैं, शायद लोगों को दूसरे कार्य याद आने लगे हैं या फिर शोक भरी उकताहट से लोग जल्द से जल्द हॉल से निकल जाना चाहते हैं। परिवार के कुछ सदस्य भी बीच-बीच में घड़ी देख रहे हैं और कुछ महिलायें आंखों के नीचे रूमाल को ऐसे धीरे से दबा रही हैं मानों भूल से भी निकल आये आंसू से उनका मेकअप न खराब हो जाये। ईश्वर की असीम कृपा है कि यहां मोबाइल से सेल्फी नहीं लिये जा रहे हैं यद्यपि बीच बीच में बेहूदे रिंगटोन वाले मोबाइल बज उठ रहे हैं जो न केवल अपने मालिक की बेहूदी पसंद बता रहे हैं बल्कि ये अपने मालिक के शिष्टाचारहीन होने का भी परिचय दे रहे हैं।

बाहर बोटल भरे पानी और चाय की व्यवस्था की ओर भी कुछ निगाहें हैं जैसे कब सभा समाप्त हो और गले को ठंडे पानी या गर्म चाय से तर किया जाय।

अंततः दो मिनट के मौन के उपरांत प्रार्थना सभा समाप्त हुई और सभी एक कतार में आकर हाथ जोड़कर हॉल से निकलते जा रहे हैं।

पुष्पहारों से लदे फोटो से मालाएं उतारी गई, फूल भी हटाये गये। सुख-दुख के कोई भी आयोजन हो, सब कुछ निर्विघ्न संपन्न हो, यही आयोजक की विनती रहती है और भगवान से वह यही प्रार्थना करता रहता है, इसी तसल्ली पर सोचा मैं भी चैन की सांस ले लूं। पर याद आया सांसे तो मेरी ही थम चुकी थी और मेरी आत्मा को ईश्वर के श्रीचरणों में स्थान देने के लिए ही इस प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया था।

कौशिक सेन गुप्ता

कार्यालय अधीक्षक
सतर्कता विभाग/मुख्यालय
जबलपुर, पमरे



कविता

एक रेल कर्मचारी का दर्द

रात- रात भर रहे तरसते
नयन नींद के आलिंगन को,
किसको कहें विवशता अपनी,
हमने सपने मोल लिए हैं ।।

अनसुलझे प्रश्नों में उलझे,
पलंग मिला तो शयन नहीं था।
निश्चित थे प्रतिफलन कर्म के,
कुछ वैकल्पिक चयन नहीं था ।।

घर छोड़े थे घर की खातिर,
पर घर जाना ही हुआ अनिश्चित ।
बाधाओं का अन्तहीन क्रम,
बिना पाप का करूँ प्रायश्चित ।।

सच तो मानो सिमट गया है,
झूठ ने गठरी खोल दिए हैं।
हमने सपने मोल लिए हैं।

हमने बहुत तलाशे जग में,
जो आदर्श संजोए मन में।
कांटे बिखरे कदम-कदम पर,
खिलते फूल न इस उपवन में।

अब तो जैसे हर फूलों से,
हमने नाते तोड़ लिए हैं।
हमने सपने मोल लिए हैं।।
कृत्रिम प्रेम - विरह के किस्से,

झूठे जग में मिले टहलते ।
सच देखे कोई आकर हमको,
विरह की वेदना कैसी होती।
सावन की धरती भी सुखी,

मन भी कितने आंसू रोती ।
संबंधों के उलझे बंधन,
जाने कितने झोल लिए हैं।
हमने सपने मोल लिए हैं।।

थोड़ा स्वार्थ छुपा लाए थे,
हमने मन की पावन गठरी में ।
जाने क्या-क्या स्वप्न लिए थे,
आँखों की निश्छल नगरी में ।

कदम पड़ा था इस दुनिया में,
नव सुख से मन आह्लादित था।

मन के किसी गहन कोने में,
पड़ा प्रेम भी आनंदित था ।

पर सच से जब हुआ सामना,
अंतर्मन हुआ बहुत व्यथित था ।
बरसों से इस निर्मम दुनिया में,
हमने खुद को घोल लिए हैं ।
हमने सपने मोल लिए हैं।।

प्रभात कुमार झा
स्टेशन प्रबंधक,
न्यू कटनी जंक्शन, जबलपुर मंडल



कविता

छोटी सी गुड़िया

छोटी सी गुड़िया, प्यारी मेरी गुड़िया
देखो कहाँ से ये आयी है,
परियों के देश से, परियों के वेश में
देखो - देखो मेरी बिटिया आयी है।
नन्ही सी गुड़िया, प्यारी सी गुड़िया
भोली - भाली कितनी न्यारी है,
छोटे इसके हाथ, छोटे से पाँव
छोटे-छोटे कदमों से आयी है।
भोली सी सूरत है, प्यारी सी आँखें है,
आँखों में अपनो का प्यार है,
देखो-देखो हो, देखो देखो देखो,
कितनी खुशियाँ ले कर आयी है।
छोटी सी गुड़िया, प्यारी मेरी गुड़िया
देखो कहाँ से ये आयी है,
परियों के देश से, परियों के वेश में
देखो-देखो मेरी बिटिया आयी है।

ऊषा किरण नामदेव
तकनीशियन-।।।

डीजल लोको शोड, नकज
जबलपुर मंडल, पमरे



निबंध

रेल प्रबंधन: थल से जल के अंदर तक

रेलवे बोर्ड स्तर पर पुरस्कृत द्वितीय निबंध

भारतीय रेल ने थल पर भाप इंजन के युग से शुरू हुए रेल प्रबंधन के सफर को नए भारत के सामर्थ्य के प्रतीक 'जल के अंदर रेल-यात्रा' तक की चुनौती को स्वीकार किया है। भारतीय रेल ने इंजीनियरिंग क्षेत्र का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मेट्रो रेलवे, कोलकाता के ईस्ट-वेस्ट मेट्रो कॉरिडोर परियोजना में हुगली नदी के अंदर हावड़ा मैदान-एस्प्लानेड विस्तारखंड में देश की पहली अंडरवॉटर टनल बनाकर मेट्रो ट्रेन का परिचालन शुरू कर दिया है। इसी प्रकार मुंबई-अहमदाबाद हाईस्पीड कॉरिडोर में ठाणे क्रीक में समुद्र के नीचे बनने वाली 7 कि.मी. लंबी रेल-सुरंग देश में पहली समुद्री सुरंग होगी जिससे जल के अंदर यह उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का सपना साकार होगा। अपने गठन से 171 वर्षों की विकास यात्रा की साक्षी रही भारतीय रेल वर्तमान में रेल यात्रियों की सुविधा, ट्रेन की गति एवं चुनौतीपूर्ण रेल मार्गों के निर्माण क्षेत्र में निरंतर गुणात्मक सुधार करते हुए रेल प्रबंधन को नया आयाम प्रदान कर रही है।

थल से जल के अंदर तक के सफर में रेल प्रबंधन में हुए परिवर्तन की आधारशिला प्रौद्योगिकी है। प्रौद्योगिकी ने भारतीय रेल के हर क्षेत्र में दक्षता और उत्पादन को बढ़ाकर प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है। विश्व रेल के इतिहास में दिनांक 26 फरवरी, 2024 का ऐतिहासिक दिन स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया है क्योंकि इस दिन विकसित भारत विकसित रेलवे कार्यक्रम के अंतर्गत 553 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास की आधारशिला रखी गई तथा 1500 रोड ओवर ब्रिज व अंडरब्रिज का शिलान्यास किया गया। भारतीय रेल ने स्वदेशी रूप से 'हाइपरलूप' प्रौद्योगिकी आधारित परिवहन प्रणाली विकसित करने के लिए आईआईटी मद्रास से हाथ मिलाया है, जो बुलेट ट्रेनों की तुलना में और तेजी से चलती है तथा इसकी परिचालन लागत एवं कार्बन, उत्सर्जन काफी कम है। इस निबंध में भारतीय रेल के प्रबंधन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे अवसंरचना विकास, परिचालन दक्षता, रेल परिवहन, यात्री सुविधाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, वहन क्षमता, स्टेशन पुनर्विकास योजना, सुरक्षा, संरक्षा, पर्यावरण आदि में हुए परिवर्तन पर निम्नानुसार प्रकाश डाला गया है :-

1. अवसंरचना विकास एवं परिचालन दक्षता :- रेलवे के इस

स्वर्णिम काल में रेलवे के बुनियादी ढांचे को रिकॉर्ड रफ्तार और पैमाने पर विकसित किया जा रहा है। भारतीय रेल ने रेल अवसंरचना और परिचालन दक्षता के विकास के लिए प्रबंधन से संबंधित निम्न महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं :-

दुनिया के सबसे ऊँचे सेतुबंध या पियर ब्रिज:- मणिपुर में जिरीबाम-इंफाल रेलवे परियोजना में नोनी के निकट इजाई नदी की घाटी पर 141 मीटर ऊँचे दुनिया के सबसे ऊँचे सेतुबंध या पियर ब्रिज का निर्माण पूरा होने वाला है। निर्माण कार्य पूर्ण होने पर, यह मोंटेनेग्रो, यूरोप स्थित माला-रिजेका वियाडक्ट के 139 मीटर के मौजूदा रिकॉर्ड को पार कर जाएगा।

दुनिया के सबसे ऊँचे रेलवे आर्च ब्रिज:- उधमपुर श्रीनगर बरामूला जैसी कठिन रेल परियोजना के अंतर्गत दुनिया के सबसे ऊँचे रेलवे आर्च ब्रिज 'चिनाब ब्रिज' का निर्माण किया गया है।

सेक्शनल गति अपग्रेडेशन: स्वर्णिम चतुर्भुज (जीक्यू) और डायगोनल मार्गों और अन्य 'बी' मार्गों को कवर करने वाले 10981 मार्ग किलोमीटर से अधिक की सेक्शनल गति को बढ़ाकर 130 किमी प्रति घंटा तक कर दिया गया है। इसके अलावा, मौजूदा नई दिल्ली-मुंबई (वडोदरा-अहमदाबाद सहित) और नई दिल्ली-हावड़ा (कानपुर लखनऊ सहित) मार्गों पर सेक्शनल गति को 160 किमी प्रति घंटे तक बढ़ाने के लिए कार्य प्रगतिशील है।

स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग : भारतीय रेल के मौजूदा उच्च घनत्व या यातायात वाले मार्गों पर और अधिक रेल परिचालन के लिए लाइन क्षमता बढ़ाने हेतु 'स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग' एक लागत प्रभावी समाधान है। भारतीय रेलवे ने 2023-24 के दौरान स्वचालित सिग्नलिंग से 582 किलोमीटर का उन्नयन किया है जो अभी तक का रिकॉर्ड भी है।

2. रेल परिवहन:- रेल प्रबंधन की प्राथमिकता रेल परिवहन है। इसमें दर्ज गुणात्मक परिवर्तन निम्न हैं :-

भारत गौरव पर्यटन ट्रेनें : "देखो अपना देश" और "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की अवधारणाओं को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इन ट्रेनों का संचालन शुरू किया गया है। इन थीम-आधारित ट्रेनों की परिकल्पना घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने हेतु की गई है।

अमृत भारत ट्रेन: ये सुपरफास्ट, गैर वातानुकूलित डिब्बों वाली एल.एच.बी. ट्रेनों गरीबों की सेवा भावना से प्रारंभ की गई हैं। बेहतर यात्री सुविधाओं से सुसज्जित इस ट्रेन के दोनों छोर पर इंजन हैं।

गति-शक्ति कार्गो टर्मिनल: रेल कार्गो को संभालने के लिए मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी हेतु इन टर्मिनलों के विकास में उद्योग से निवेश बढ़ाने के लिए 'गति-शक्तिमल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी)' नीति प्रारंभ की गई है और निरंतर जीसीटी स्थापित किए जा रहे हैं।

अनुभूति कोच: रेलयात्रियों को हवाई सफर जैसी अनुभूति करवाने के लिए अत्याधुनिक डिजाइन से सुसज्जित ये कोच प्रयोग में लाए जा रहे हैं।

अन्त्योदय, हमसफर एवं उदय रेलगाड़ियाँ: अन्त्योदय अनारक्षित सुपर फास्ट सेवा, हमसफर पूरी तरह से 3-एसी रेलगाड़ी एवं उदय डबल-डेकर प्रकार की रेलगाड़ियों से रेल प्रबंधन के आयाम बदल रहे हैं।

तेजस रेलगाड़ी : 130 कि.मी. प्रति घंटा की गति की इस रेलगाड़ी का शुभारंभ किया जा चुका है।

3. प्रबंधन संबंधित यात्री सुविधाएँ :- यात्री गण की अपेक्षा है कि रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई गई प्रबंधन संबंधित जनोपयोगी सुविधा में स्पष्टता और गुणवत्ता हो। इसी के मद्देनजर भारतीय रेल द्वारा उपलब्ध कराई गई विश्वस्तरीय प्रबंधन संबंधित यात्री सुविधाएँ इस प्रकार हैं :-

काशी तमिल संगम एक्सप्रेस: काशी और तमिलनाडु के बीच सदियों पुराने ज्ञान एवं प्राचीन सभ्यतागत जुड़ाव को ध्यान में रखते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना के अनुरूप यात्रियों की सुविधा हेतु तमिलनाडू से काशी के लिए यह नियमित ट्रेन-सेवा दिसंबर 2023 में प्रारंभ की जा चुकी है।

जनऔषधि केंद्र : कुछ महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों में जनऔषधि केंद्र स्थापित किए गए हैं जिससे यात्रियों की भलाई के लिए किफायती मूल्यों पर गुणवत्तापूर्ण दवाइयाँ और उपभोग्य वस्तुएँ (जनऔषधि उत्पाद) उपलब्ध कराई जा रही हैं।

वातानुकूलित 3-टीयर इकोनॉमी कोच: भारतीय रेल में आधुनिक यात्री सुविधा युक्त ये कोच शामिल हुए हैं। 3 ए. सी. कोच की 72 बर्थ की तुलना में इस नए कोच में 83 बर्थ हैं। ये

अधिक सुरक्षित हैं, इसके साथ ही 8% कम किराया भी है।

विस्टाडोम कोच: मोड़, सुरंगों और पुलों से युक्त पर्वतीय रेलमार्ग के यात्रा अनुभवों को अविस्मरणीय बनाने एवं पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु समग्रशयक प्रणालीयुक्त विस्टाडोम कोच उपयोग में लाए जा रहे हैं।

हेल्पलाइन नंबर 139: भारतीय रेल ने समस्त हेल्प लाइन नम्बरों का केंद्रीयकृत हेल्पलाइन नंबर 139 बनाया है ताकि यात्रियों द्वारा की जाने वाली शिकायतों का त्वरित निवारण संभव हो सके।

4. सूचना प्रौद्योगिकी: - सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डिजिटल रूपांतरण रेलवे के आधुनिकीकरण का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग बन गया है। परिवर्तन प्रवाह में विश्व के पाँच सबसे बड़े यात्री रेल तंत्रों में से एक भारतीय रेल भी संसार के साथ कदमताल कर निम्न सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में परिवर्तन कर रेल प्रबंधन को सुलभ बनाई है :-

फेशियल रिकग्निशन सिस्टम: प्रमुख स्टेशनों पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक आधारित यह सिस्टम लगाने की योजना बनाई गई है जिससे डेटाबेस के साथ अपराधियों की फोटो मिलान के पश्चात आरपीएफ को अलर्ट किया जा सके।

रियलटाइम सूचना प्रणाली (आर.टी.आई.एस.): इस प्रणाली को अनेक रेल इंजनों में लागू करने से जीपीएस उपकरण 'उपग्रह संचार' का उपयोग कर ट्रेनों की रियल टाइम ट्रैकिंग करते हैं जिससे रेल संचालन की वास्तविक जानकारी मिलती है।

नेक्स्ट जनरेशन ई-टिकटिंग: भारतीय रेल ने बढ़े हुए कार्यभार को संभालने के लिए नेक्स्ट जनरेशन ई-टिकटिंग सिस्टम की क्षमता को वर्ष 2014 में 7200 टिकट प्रति मिनट से बढ़ाकर अब 25000 टिकट प्रति मिनट से अधिक कर दी है।

ई-केटरिंग: इसके अंतर्गत अनेक ट्रेनों में एस.एम.एस. या संबंधित नंबर पर कॉल करके ऑन-बोर्ड खाना उपलब्ध कराया जा रहा है। रेल यात्रियों के लिए भोजन ऑर्डर करने के लिए एक व्हाट्सएप नंबर भी आरंभ किया गया है।

मोबाइल फोन के माध्यम से पेपरलेस अनारक्षित टिकट: अनारक्षित डिब्बों में यात्रा करने के लिए अनेक यात्री अब टिकट लाइन में खड़े होने की अपेक्षा मोबाइल फोनों पर यूटीएस एप से

टिकट प्राप्त कर रहे हैं।

5. रेल प्रबंधन में वहन क्षमता :- विगत वर्षों के दौरान मालभाड़ा तथा यात्रीभाड़ा का असंतुलन धीरे-धीरे बढ़ने से भारतीय रेल मालवाहक सेवाओं को दुनिया की सबसे महंगी रेल सेवाओं में से एक बना दिया है। अतः रेलप्रबंधन में वहन अवसंरचना में गुणात्मक परिवर्तन हेतु ये कदम उठाये गए हैं :-

डबल स्टैक इवार्फ कंटेनर: कुछ समय पूर्व भारतीय रेल ने यह कंटेनर प्रारंभ किये हैं जिनमें सामान्य कंटेनरों की तुलना में 67% ज्यादा सामान आ सकता है।

डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (डीएफसी) : पूरी तरह से माल परिवहन के लिए समर्पित इस महत्वाकांक्षी परियोजना के पश्चिम और पूर्वी डीएफसी में से पूर्वी डीएफसी का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। माल-ढुलाई में रेलवे के 40 प्रतिशत मॉडल हिस्से को प्राप्त करने के लिए इस पर्यावरण अनुकूल परियोजना की प्रमुख भूमिका रहेगी।

रोलऑन-रोलऑफ (रो-रो) सेवा: यह सेवा विभिन्न वस्तुओं से भरे सड़क वाहनों को खुले समतल रेलवे वैगनों पर ले जाने की अवधारणा है जो मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी पर आधारित है एवं घर घर सेवाएँ प्रदान करती है। यह सेवा लंबी दूरी की ट्रक ड्राइविंग एवं कीमती ईंधन को बचाती है।

6. अमृत भारत स्टेशन एवं स्टेशन पुनर्विकास योजनाएँ :- यात्रियों के लिए अगर ट्रेन चलता-फिरता घर होती है, तो रेलवे स्टेशन भी अस्थाई घर जैसे ही होते हैं। विकसित होते भारत के रेलवे स्टेशनों को आधुनिक बनाने के उद्देश्य से ये योजनाएँ हैं :-

अमृत भारत स्टेशन योजना: इस योजना के अंतर्गत 1318 रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। ये स्टेशन स्थानीय विरासत और विकास दोनों के प्रतीक होंगे। यह योजना मुख्य रूप से आधुनिक, आरामदायक और स्वच्छ रेलवे परिसरों को उपलब्धि कराने पर केंद्रित है।

स्टेशन पुनर्विकास योजना : यात्रियों को आधुनिक सुविधाएँ प्रदान करने के लिए देश के प्रमुख स्टेशनों का पुनर्विकास किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप रोजगार में वृद्धि और बेहतर आर्थिक विकास जैसे कई सकारात्मक प्रभाव पड़ेंगे। तीन प्रमुख रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास कर दिया गया है: गांधीनगर कैपिटल स्टेशन के ऊपर होटल भी बनाया गया है, रानी

कमलापति स्टेशन देश का पहला आईएसओ-सर्टिफाइड एवं पहला पीपीपी-मॉडल आधारित रेलवे स्टेशन है तथा सर एम. विश्वेश्वरैया टर्मिनल स्टेशन देश का पहला सेंट्रलाइज्ड एयर कंडीशनर रेलवे स्टेशन है।

7. पर्यावरण :- भारतीय रेल विश्व की सबसे बड़ी हरित रेलवे बनने का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मिशन मोड में कार्य कर रही है और वर्ष 2030 तक 'शून्यकार्बनउत्सर्जक' बनने के पथ पर अग्रसर है। रेल प्रबंधन में कार्बन प्रभाव को कम करने हेतु किये गए महत्वपूर्ण उपाय निम्नानुसार हैं:-

हेड ऑनजनरेशन (एचओजी) प्रणाली: आत्म निर्भरता की दिशा में एल एच बी रेल डिब्बों को घरेलू स्तर पर 'हेड ऑनजनरेशन' प्रणाली में बदला जा रहा है जिसमें सवारी डिब्बों में वातानुकूलन, प्रकाश व्यवस्था, पंखे आदि के लिए बिजली इंजन को शिरोपरि उपस्कर (ओएचई) से बिजली आपूर्ति की जाती है। इससे पॉवरकारों से छुटकारा मिलता है और जेनरेटर में खपत होने वाले बहुमूल्य डीजल की बचत होने के साथ वायु-प्रदूषण भी कम होता है।

कर्षण के लिए सौर ऊर्जा: सौर ऊर्जा एक गैर प्रदूषणकारी और कम ऊर्जा लागत स्रोत है। कर्षण के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग करने के लिए पश्चिम मध्य रेल के बीना में 1.7 मेगावाट की विश्व में अपनी तरह की सर्वप्रथम सौर ऊर्जा परियोजना पहले ही स्थापित की जा चुकी है, जो 25 किलो वोल्ट पर सीधे कर्षण प्रणाली में सौर विद्युत शक्ति की पूर्ति कर रही है।

रेल-विद्युतीकरण: भारतीय रेल परिवहन के पर्यावरण - अनुकूल, अधिक ढुलाई क्षमता और ऊर्जा-कुशल साधन प्रदान करने के साथ-साथ सेक्शनल क्षमता में बढ़ोत्तरी की दृष्टि से ब्रॉड-गेज ट्रैक के 100 फीसदी विद्युतीकरण की दिशा में आगे बढ़ रही है। भारतीय रेलवे के इतिहास में 2023-24 के दौरान 7,188 आर के एम का रिकॉर्ड विद्युतीकरण किया गया है।

8. संरक्षा:- भारतीय रेल द्वारा संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। रेलवे की चल-अचल परि सम्पत्तियों के नवीनीकरण, प्रतिस्थापन, सुरक्षा सुधार कार्यों के लिए निरंतर कार्यवाही की जा रही है। संरक्षा में निम्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं-

कवच: यह एक स्वदेशी रूप से विकसित आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली है। भारतीय रेल में ट्रेन-संचालन में सुरक्षा

के लिए चयनित रेल मार्गों पर इसको क्रियान्वित किया जा रहा है। 'कवच' प्रणाली का मुख्य कार्य ट्रेनों को खतरे के सिगनल पार करने और आमने-सामने की टक्कर से सुरक्षा प्रदान करने के लिए है।

एलएचबी कोच : भारतीय रेल वर्तमान में पारंपरिक कोचों का निर्माण बंद कर कम लागत वाले, अधिक सुरक्षित और अधिक गति के एलएचबी कोचों के साथ रेल यात्रा सुनिश्चित कर रही है। **फाग-पास डिवाइस :** कोहरे के समय गति एवं सुरक्षित ढंग से ट्रेन संचालन के लिए लोको पायलटों को ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जी.पी.एस.) पर आधारित हैण्ड-हेल्ड पोर्टेबल उपकरण 'फाग-पास डिवाइस' दिया गया है।

9. सुरक्षा:- भारतीय रेल में प्रतिदिन दो करोड़ से ज्यादा यात्री सफर करते हैं। भारतीय रेल विशेषकर महिला यात्रियों की यात्रा को अधिक से अधिक सुरक्षित इस प्रकार बना रही है:-

बैटमैन स्कवॉड : पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल ने 'बैटमैन' नाम से पूरी रात टिकट जाँच के लिए एक दल शुरू किया है जो 'बी अवेयर टीटीई मैनिंग एट नाइट' का संक्षिप्त रूप है। इस अवधारणा का उद्देश्य रात में लोकल ट्रेन के अंदर और पश्चिम रेलवे के मुंबई उपनगरीय स्टेशनों पर अनधिकृत टिकट यात्रा की जाँच करना एवं महिला यात्री सुरक्षा पर भी ध्यान रखना है।

ट्विटर, फेसबुक, सीपीग्राम: यात्रियों की सुरक्षा बढ़ाने और उनकी सुरक्षा से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु रेलें ट्विटर, फेसबुक, सीपीग्राम सहित विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के जरिए महिलाओं एवं यात्रियों के साथ नियमित संपर्क में रहती हैं।

आपातकालीन टॉक बैंक प्रणाली: सभी नव-निर्मित इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (ईएमयू) और कोलकाता मेट्रो के वातानुकूलित रेको के महिला कंपार्ट/सवारी डिब्बों में यह प्रणाली मुहैया कराई गई है।

सीसीटीवी कैमरा : सुरक्षा बढ़ाने के लिए रेल डिब्बों और स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं जिससे विशेषकर महिलाएं एवं वरिष्ठ नागरिक लाभान्वित होंगे

मेरी सहेली : ट्रेनों से अकेले यात्रा करने वाली महिला यात्रियों की पूरी यात्रा के दौरान बढ़ी हुई और बेहतर सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक पहल 'मेरी सहेली' भी जारी है। महिला

आरपीएफ अधिकारियों और कर्मियों की लगभग 230 टीमों इस उद्देश्य के लिए वर्तमान में कार्यरत हैं।

अंत में कहना उचित होगा कि थल से जल तक की रेल प्रबंधन की यात्रा में भारतीय रेल अब निरंतर तीव्र, स्वच्छ और आधुनिकतम बन रही है। वंदेभारत, अमृत भारत, नमो भारत जैसी आधुनिक सेमी हाई-स्पीड ट्रेनें, विद्युतीकरण की तेज गति और ट्रेनों के अंदर तथा स्टेशन प्लेटफॉर्मों पर साफ-सफाई इसके उदाहरण हैं।

भारतीय रेल ने जटिल कोंकण, दुर्गम पूर्वोत्तर और सामरिक महत्व की कश्मीर घाटी को रेल-नेटवर्क के माध्यम से देश की मुख्य धारा में जोड़कर रेल प्रबंधन में अद्भुत विकास किया है। एक ओर भारतीय रेलवे के गतिशक्ति विश्वविद्यालय, वडोदरा और एयरबस ने जुलाई 2024 में नई दिल्ली में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए जिससे देश में तेजी से बढ़ते एयरोस्पेस क्षेत्र के लिए छात्रों के लिए नौकरी के अवसर उत्पन्न होंगे तो दूसरी ओर भारतीय रेल अपनी विरासत के प्रसिद्ध स्टेशनों को संजोए हुए है जैसे पिछले वर्ष लगभग 170 वर्ष पुराने भायखला रेलवे स्टेशन को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए यूनेस्को द्वारा 'विरासत संरक्षण पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। एक ओर वंदेभारत मेट्रो (नमो भारत रैपिड रेल) अहमदाबाद से भुज के बीच में सितंबर 2024 में प्रारंभ हो चुकी है तो दूसरी ओर वंदेभारत एक्सप्रेस की तेजी और दक्षता के साथ सफाई के लिए '14 मिनट की चमत्कारी सफाई' योजना सफाई-अभियान में प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस तरह थल पर भाप इंजन से प्रारंभ हुई रेल यात्रा अब मुंबई - अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर में समुद्र के नीचे प्रस्तावित 7 किमी लंबी रेल-सुरंग की ओर अग्रसर होकर रेल-प्रबंधन में हो रहे निरंतर विकास को स्वर्ण अक्षरों से लिख रही है।

संजीव तिवारी

मुख्य संकेत एवं दूरसंचार इंजी.
मुख्यालय, पमरे, जबलपुर



कविता

दीवाली

द्वारे-द्वारे सज गई रंगोली,
कमल-फूल घर-घर आ गये,
दरवाजे में तोरण लग गये,
खुशियों की भर रही है झोली,
आ गई रे, छा गई रे, दीवाली।
शाम ढले मां लक्ष्मी का पूजन,
सजी मिट्टी के दीयों की कतारें,
लाइन लगाये रोशन आंगन।
बम फटाके टकटकी लगाये,
आवाजों के गूँजे हैं, गुंजन।
मोबाइल से घर-घर की तस्वीर निकाली,
आ गई रे, छा गई रे दीवाली।
रेल परिवार ने भी दीपावली मनाई,
सुंदर-सुंदर सुनहरे संदेशों से,
बज गई शुभकामनाओं की शहनाई।
माताओं-बहिनों ने रंगोली सजाई,
जैसे घर आंगन में बगियां मुस्काई।
मन-मंदिर के गहरे समुंदर में,
भर गई मीठे व्यवहार की बोली,
आ गई रे, छा गई रे दीवाली।
आ गई रे, छा गई रे दीवाली।
रफाकतों का दौर चला,
लजीज व्यंजन आये थाली में।
नशा शराब का ऐसा चढ़ा,
के शरीर साबूत मिला नाली में।
होश आया तो हंसकर यूँ कहने लगे,
अगले साल फिर मिलेंगे दीवाली में।
आंसू और रंजोगम छिपाये हैं उसने,
खुद जलकर माटी के दीये जलाये हैं उसने।
किसी से मांगकर थोड़ी मिठाई जुटा ली,
और परिवार को गले लगा कहता है,
'हैप्पी दीवाली'
जगमगाती सफाई, भिखारी का
बर्तन खाली है,
दूर से देखता है प्रकाश पर्व,
भूखे पेट चेहरे पे खुशहाली है।
भीड़ देख रिश्ता दूढ़ता है,
अरसे से उसके पास नहीं घरवाली है।

फटाकों की आवाज में उसकी
सदाएँ नहीं सुनता है कोई,
मेरे शहर के फुटपाथ पे
आज ऐसी भी दीवाली है।

राजेश लखेरा,
सीनियर सेक्शन इंजीनियर (टेली)
मुख्यालय, प.म.रे., जबलपुर



बाल कविता 'दीवाली'

गया दशहरा, आई दीवाली चेहरों पर, खुशियों की लाली,
खील-बताशे, बाँट रही है, अम्मा सबको, भर-भर थाली।
नए-नए परिधान, मिठाई आज खुशी का दिन है भाई,
लक्ष्मी जी की होगी पूजा काम करेंगे, हम फिर दूजा।
भोजन आज बनेगा खास, खुशियाँ बड़ी, बड़ी है आस,
गुंझिया, भुजिया और मिठाई, फुलझड़ी-पटाखे, भी हैं भाई।
दादा-दादी, साथ है अपने, बेशक, पूरे होंगे, सपने,
झुकाओ, उनके आगे शीश, मिलेगा उनका, फिर आशीष।
ईश्वर तुमसे, यहीं प्रार्थना, हम बच्चों की ये उपासना,
कोई भी दिन, रहे न खाली, रोज दशहरा, रोज दीवाली।

सलीम 'स्वतंत्र'
लोको पायलट
कोटा मंडल, पमरे



कविता

हल्दीघाटी

हल्दीघाटी युद्ध की तैयारियों के बीच राणा के मन में चिंता हुई एवं किंचित से चिंतित राणा विचार करते हैं कि अकबर की एक लाख की सेना देखकर कहीं ऐसा न हो कि मेरे बीस हजार सैनिकों के कदम लड़खड़ा जाएँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरी तलवार की टंकार शिथिल पड़ जाएँ। कहीं ऐसा न हो कि मेरे भाले का वार हल्का पड़ जाए। कहीं ऐसा न हो कि मेरे सेनापति का हौसला कमजोर पड़ जाए। कहीं ऐसा न हो कि मेरा हाथी निद्राल पड़ जाए। कहीं ऐसा न हो कि चेतक की टांपे धीमी हो जाए।

यह सब सोचकर किले की प्राचीर से सेना को संबोधित करते हुए राणा बोलते हैं

राणा - जब होगी भर चारों ओर, प्रलय का फिर मचेगा शोर।
मुगल सल्तनत काँप उठेगी, युद्ध होगा भीषण घनघोर।
भास्कर भी कल मुगलों का, काल बनकर आएगा।
लाशों से हल्दीघाटी की, माटी का रंग लाल हो जाएगा।
बात सुनो तुम वीर सपूतों, रण में नाम डुबोना मत।
प्राण जाएँ तो चले जाए, पर शत्रु को पीठ दिखाना मत।
मिट जाएगा जो माटी की खातिर, वीर शहीद कहलायेगा।
और जो भागा रण छोड़कर, शिकार मेरा ही बन जाएगा।

यह सुनकर राणा की तलवार बोल पड़ती है-

लोह म्यान की शृंगार हूँ मैं, लहू नदियों की धार हूँ।
मैं प्यार हूँ, अंगार हूँ। यलगार हूँ, ललकार हूँ ॥
गुंजार हूँ, फुंकार हूँ। हुंकार हूँ टंकार हूँ ॥
जो वक्ष दे दुश्मन का, राणा की तलवार हूँ मैं ॥
हे राणा के शेरों तुम, एक लिंगी का ध्यान करो।
चलो जीत लो दुनिया को, रणचंडी का आव्हान करो ॥

यह सुनकर राणा का भाला बोल पड़ता है -

काल से भी काला हूँ मैं, अस्सी किलो वाला हूँ मैं ॥
दावानल की ज्वाला सा, दक्ष हरफनमौला हूँ मैं ॥
राणा तेरा भला रण में, कमाल कर आएगा।
गर्दन दुश्मन की उखाड़कर, ढाल तेरी बन जाएगा।
राणा तेरा भला रण में, तांडव प्रचंड मचाएगा।
अपना जौहर दिखाएगा और महाकाल बन जाएगा ॥

यह सुनकर राणा के सेनापति झल्ला मन्ना बोल पड़ते हैं-

शपथ झाला की है, हे राणा आंच तुझे नहीं आने दूँगा।
जरूरत आन पड़ी अगर तो, प्राण आहुति दे दूँगा ॥
मान का गुमान मिटाकर, टुकड़े उसके कर दूँगा।
और मुगलों को औकात दिखाकर, उनको धूल चटाऊँगा ॥
यह सुनकर राणा के मित्र हाकिम खान सूरी बोल पड़ते

है-

राजपूतों संग खड़ी है, सेना इस पठान की।
सिपहसालार राणा तेरा हूँ मैं, कसम मुझे विधान की ॥
लहुलुहान मुगलों को कर दूँगा, ये जुबान इस सुजान की।
खाहिश राणा पूरी करना, एक इस जवान की।
मर मिटा माटी खातिर तो, बाकी यह निशाँ होगा।
दफन मुझे तलवार संग करना, यही मेरा सम्मान होगा ॥

यह सुनकर राणा का राम प्रसाद हाथी बोल पड़ता है -

सुन राणा अब मेरी बात, सिपाही में भी मतवाला हूँ।
नमन है उसे मातृभूमि को, जिसका मैं रखवाला हूँ ॥
कल रण में जब मैं उतरू तो, गंडूष में शमशीर रखूँ।
और स्वाद शत्रु के लहू का, एक बार मैं भी तो चखूँ ॥

यह सुनकर चेतक बोल पड़ता है -

पाल तूने मान से है, चेतन की जुबान ये है।
राणा तो बहुत हुए, लेकिन महाराणा बस तू ही है ॥
रणभूमि में राणा तेरा कर्जा जरूर चुकाऊँगा।
अपनी टांपों से उन सांपों का, वजूद रोंध कर आऊँगा ॥
पवन सूत से मारुत बनकर, रण में जौहर दिखाऊँगा।
राजपुताना की रक्षा खातिर, मैं फर्ज अपना निभाऊँगा ॥

सबकी बात सुनकर अंत में राणा जोश से ओतप्रोत हो जाते हैं तथा बोलते हैं कि-

मुगलों पर भारी पड़ेगी, यलगार अब यह राणा की।
और कहर बनकर बरपेगी, तलवार अब यह राणा की ॥
रक्त से रक्तित कर दूँगे, भूमि हल्दीघाटी की।
और बलिदानों से पतित कर दूँगे, कहानी मेवाड़ी माटी की ॥
गर्दन दुश्मन की कट जाने तक, हाथ यह रुकेगा नहीं।
और राणा की अंतिम सांस तक, ध्वज केसरिया झुकेगा नहीं।
राणा सांगा का मैं, सुपौत्र तभी कहलाऊँगा।
एकलिंग की जय बोलकर, प्रताप अमर कर जाऊँगा ॥
भारत माता की जय

मयंक जैन

लेखाकार, लेखाविभाग
मुख्यालय, पमरे



कविता

सेवानिवृत्ति

वो स्कूल की यादें वो बचपन की कहानी
 वो टीचर से डरना, वो बचकर निकलना।
 कुछ हल्की सी यादें हैं धुंधली अभी तक
 वो स्कूल से आना और किताबों से गुनगुना।
 वो बहाना बनाकर स्कूल न जाना।
 वो तुरंत ठीक हो जाना, और खेलना खिलाना।
 वो पापा की उंगली पकड़कर बाजार जाना।
 वो कपड़े की मिठाई और खिलौनें को लाना।
 वो गर्मी की छुट्टी में नानी के घर जाना।
 वो मामा के घर में मौज मस्ती मनाना।
 गुजरा वो कैसे पता ही नहीं है।
 वो बचपन मेरा था कितना सुहाना।
 फिर धीरे से दी जवानी ने दस्तक।
 हुआ सिलसिला फिर जिम्मेदारी निभाना।
 यूँही चलता रहा दौर कुछ कर के दिखाना।
 चला मैं घर से लेकर फिर हसरतों का फसाना।
 मंजिलें दूर थी और बहुत कठिन था ठिकाना।
 शायद मिल जाए कहीं मेरी उम्मीदों का आशयाना।
 पर दिन में था जज्बा उसको पाकर दिखाना।
 तमन्नाओं को हकीकत में बदलकर दिखाना।
 ना था इतना आसान कामयाबी को पाना।
 फिर एक दिन खुल गया मेरी किस्मत का खजाना।
 कुदरत ने फिर मुझको ऐसा नवाजा
 मिला मुझको वो सब हसरत थी जिसको पाना
 तकदीर ने एक ओहदा मेरी किस्मत में लिख दिया।
 मकसद था जिसका हुक्मती जिम्मेदारी निभाना।
 बढ़ने लगे तारीफ के सिलसिले गुआश्रे में मेरी।
 रहमतों से उसकी मुझे जमाने ने खूब पहचाना।
 फिर आई जिंदगी में इक खूबसूरत हकीकत।
 मकसद भी था जिसका साथ जिन्दगी निभाना।

चलता रहा फिर दौर यूँही खुश नसीबी का मेरे।
 नन्ही सी इस परी का घर में मेरे वो आना।
 रहमत ओ मेहनत और कायदों के मुताबिक।
 उस बारी ता आला के, तरक्कियों का बढ़ते जाना।
 था फर्ज जिंदगी में बच्चों और वालदेन का भी।
 इम्तिहान ए जिंदगी में वो फर्जों से फारिंग होते जाना।
 चलता रहा सफर भी कटती गई मुश्किल भी।
 कभी गम में ऑफिस आना कभी खुश होकर घर को जाना।
 क्या खूब हुआ करता था वो जिम्मेदारी निभाना।
 कभी साहब से डांट खाना कभी उन्हीं से इनाम पाना।
 गुजरा वो वक्त ऐसे के कुछ पता ही नहीं चला।
 अहसास ए जिंदगी में फिर वो बुढ़ापे का वो आना।
 अब खत्म वो जिम्मेदारियों का जमाना।
 होकर रिटायर अब हमें अपने घर को जाना।
 बस यही था मेरा फसाना
 था रिटायरमेंट का बहाना,
 और जिम्मेदारी को आपके सहारे छोड़कर जाना।
 मत भूलना मेरा फसाना,
 कभी मैं याद आ जाऊं तो वही पुराना है
 मेरा ठिकाना और मुझसे मिलने मेरे घर जरूर आना।
 मेरा अंतिम निपटारा जल्दी निपटाना
 और मेरा सारा पैसा मेरे खाते मैं तुरंत पहुंचाना
 मैं आपका हमेशा रहूंगा दीवाना।

मोहम्मद शहीद कुरैशी
 वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी
 लेखा विभाग मुख्यालय
 पमरे, जबलपुर



गीत

नर्मदा की गोद में - जबलपुर का गीत

नर्मदे हर! तेरे नाम में उजयारा अपार,
तेरी लहर में बहता जीवन का सार।
हे जननी! तेरी गोद में मिटे हर भार,
तेरे स्मरण से मन हो आलोकित साकार।

नर्मदा का आगमन

अमरकंटक शिखर से उतरी नर्मदा सुहानी,
झरनों की रूनझुन बुनती जीवन-कहानी।
संगमरमर की चाँदनी में भेड़ाघाट मुस्काए,
धुआंधार की धारा में हर धुन गुनगुनाए।

बरगी का सौंदर्य

बरगी की लहर पर झूले बादल सलोने,
लहरों संग हँसे नभ के नीले कोने।
कटंगी झरनों से झरते मोती निर्मल,
हरी छाँव में सपने खिलें कोमल और सरल।

खंडारी का सन्नाटा

खंडारी किनारे शांति का आलिंगन,
झरनों की धुन हर ले हर दुखन।
वन-पथ की सरसर में उभरे सदी के तान,
हर रग में बहता प्रकृति मधुर गान॥

डुमना की हरियाली

डुमना की पगडंडी पे हँसी हरियाली,
टोंय ट्रेन संग लौटे बचपन की लाली।
झील किनारे, तराने गुनगुनाएं प्रभात के
हिरणों की छवि कहे किस्से प्रेमाघात के

सतपुड़ा का आलिंगन

सतपुड़ा तले हँसे पगडंडी प्यारी,
भदभदा झरनों से धुलें पीर सारी।
बूँदों की लय हर मन को बहलाए,
हरी छाया में आशा का दीप जलाए।

ग्वारीघाट की आरती

ग्वारी घाट पर स्वर्ण किरणें बिखरें निशा में,
संध्या आरती झिलमिल नर्मदा की भाषा में।
दीपों की रेखाएँ आकाश छू जाएँ
मंत्रों की प्रतिध्वनि से विश्वास जगमगाएँ

मदनमहल की दृष्टि

मदनमहल की चोटी से नीला नगर निहारे,
सागौन की डालों पर संध्या छबि उतारे।

घाटियों में गूँजे भेड़ाघाट के गीत,
नर्मदा की लहरें भरें हर मन में प्रीत।

रानी दुर्गावती और गोंड वीरों का गौरव

रानी दुर्गावती की वीरता अमर कहानी,
माटी की गंध में अब भी है वो बलिदानी।
वीर शंकर - रघुनाथ शाह की रणगाथा सुहानी,
जबलपुर की पावन माटी में बसती शौर्य की निशानी

बैलेसिंग रॉक का रहस्य

बैलेसिंग रॉक खड़ा धैर्य का प्रतीक,
प्रकृति की गोद में महके मधुर संगीत।
युगों से अडिग, स्थिर और महान,
धरती का आश्चर्य बने संतुलन की पहचान।

तिलवारा से त्रिपुरी तक

तिलवारा से त्रिपुरी तक इतिहास गाए,
वैदिक मंत्रों में सृष्टि का रहस्य जगमगाए।
पत्थर बोले संस्कृति का अमर बयान,
हर युग में जबलपुर गाए अपनी शान।

लोक और जीवन

सगड़ा ताल, भवानी चौक की रौनक निराली,
लोकगीत, थिरकन में झूमें हरियाली।
मंडला का पान, महुए की मिठास,
हर मुस्कान झलकाए, अपनापन की आस।

साहस और समरसता

हरी पहाड़ियों से धैर्य का संदेश मिले,
झरनों की लय संग साहस के दीप जले।
स्वच्छ हवा में विनम्रता का बीज पले,
समुदाय का गान जीवन में गूँज चले।

नर्मदा की गोद में विश्राम (समर्पण)

मेरी माटी की महक में जीवन अर्थ पाऊँ,
तेरे सानिध्य में आत्म उजियाना पाऊँ।
झरनों की तान में अमर सुख मैं पाऊँ,
हे नर्मदे! तेरी गोद में मैं सदा समा जाऊँ।

प्रवीन खोराणा

प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी
पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 70वीं तिमाही बैठक का आयोजन



क्षेराकास की 70वीं बैठक में श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे का पौधा भेंट कर स्वागत करते हुए, श्री एम.एस.हाशमी, मुराधि, पमरे



क्षेराकास की 70वीं तिमाही बैठक की अध्यक्षता करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे



क्षेराकास की 70वीं तिमाही बैठक के दौरान राजभाषा पत्रिका 'राजभाषा सरिता' के 54 वे अंक का विमोचन करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे तथा समिति सदस्य एवं विभाग प्रमुख, पमरे



क्षेराकास की 70वीं तिमाही बैठक में उपस्थित समिति सदस्य एवं अन्य प्रतिनिधि अधिकारीगण

राजभाषा पखवाड़ा - 2025 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह



राजभाषा समापन समारोह का दीपप्रज्ज्वलन कर शुभारंभ करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे और महिला कर्मचारी कल्याण संगठन की पदाधिकारीगण



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के अवसर पर उद्बोधन देती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के अवसर पर राजभाषा शील्ड एवं ट्रॉफी प्रदान करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के अवसर पर राजभाषा पुरस्कार (राजपत्रित वर्ग) प्राप्त अधिकारियों के साथ श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे और श्री एम.एस.हाशमी, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), पमरे

राजभाषा पखवाड़ा - 2025 पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के अवसर पर राजभाषा पुरस्कार (अराजपत्रित वर्ग) प्राप्त कर्मचारियों के साथ श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे और श्री एम.एस.हाशमी, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), पमरे



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के अवसर पर राजभाषा पुरस्कार (अराजपत्रित वर्ग) प्राप्त कर्मचारियों के साथ श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे और श्री एम.एस.हाशमी, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), पमरे



राजभाषा पखवाड़ा 2025 के अवसर पर राजभाषा पुरस्कार (अराजपत्रित वर्ग) प्राप्त कर्मचारियों के साथ श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे और श्री एम.एस.हाशमी, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण), पमरे

क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव - 2025



हिंदी नाट्योत्सव एवं राष्ट्रीय गीत कार्यक्रम का दीपप्रज्ज्वलन कर शुभारंभ करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे,



क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव 2025 के अवसर पर उद्बोधन देती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे,



क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव 2025 के अवसर पर नाट्य दलों को ट्रॉफी प्रदान करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे



क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव 2025 के अवसर पर नाट्य दलों को ट्रॉफी प्रदान करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे

क्षेत्रीय रेल हिंदी नाट्योत्सव - 2025 की झलकियाँ



सखी सुहाग राम मोहे दीन्हा - प्रथम नाटक



भेडिया तंत्र - द्वितीय नाटक



अपनी भाषा अपना गौरव - तृतीय नाटक



फल की माया - प्रेरणा पुरस्कार



और फिर अंधेर नगरी - प्रेरणा पुरस्कार



मानव का पुरुषार्थ - प्रेरणा पुरस्कार

विविध गतिविधियाँ



राष्ट्रगीत वंदेमातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित सामूहिक गान में शामिल श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, श्री प्रमोद कुमार खत्री, अपर महाप्रबंधक, श्री एम.एस. हाशमी, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अन्य विभाग प्रमुख तथा कर्मचारीगण, पमरे



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अवसर पर सतर्कता पत्रिका का विमोचन करती हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे

सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2025



सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अवसर पर सतर्कता शपथ दिलाते हुई श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय, महाप्रबंधक, पमरे



स्वतंत्रता दिवस महोत्सव (स्वच्छ अभियान – 2025) के अवसर पर आयोजित 'स्वच्छता प्रश्नमंच' कार्यक्रम का एक दृश्य

अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
1. परितोषिक	पारितोषिक	29. मान्यनीय	माननीय
2. अतिशयोक्ति	अतिशयोक्ति	30. उलंघन	उल्लंघन
3. फागुन	फाल्गुन	31. ओचित्य	औचित्य
4. महत्व	महत्त्व	32. कनिष्ठ	कनिष्ठ
5. मुहुर्त	मुहूर्त	33. रूग्ण	रूग्ण
6. अक्षुन	अक्षुण्ण	34. कृप्या	कृपया
7. कार्यान्वन	कार्यान्वयन	35. रूपया	रुपया
8. मध्यान्ह	मध्याह्न	36. अपरान्ह	अपराह्न
9. व्यंग	व्यंग्य	37. उपरोक्त	उपर्युक्त
10. शत्रुहन	शत्रुघ्न	38. अतैव	अतएव
11. त्यौहार	त्योहार	39. अंतकरण	अंतःकरण
12. अन्तरराष्ट्रीय	अंतरराष्ट्रीय	40. अन्वेशण	अन्वेषण
13. अतिथी	अतिथि	41. तदोपरान्त	तदुपरान्त
14. श्रीमति	श्रीमती	42. चिन्ह	चिह्न
15. कवित्री	कवयित्री	43. रचियता	रचयिता
16. ओद्योगिक	औद्योगिक	44. विशिष्ठ	विशिष्ट
17. परिवारिक	पारिवारिक	45. दवाईयाँ	दवाईयाँ
18. सप्ताहिक	साप्ताहिक	46. पुरस्कार	पुरस्कार
19. अनुग्रह	अनुग्रह	47. मुर्धण्य	मूर्धन्य
20. अन्तर्धान	अन्तर्धान	48. जागृत	जागृत या जागरित
21. अन्ताक्षरी	अन्त्याक्षरी	49. द्विवार्षिक	द्वैवार्षिक
22. अनाधिकार	अनधिकार	50. त्रिमासिक	त्रैमासिक
23. अत्याधिक	अत्यधिक	51. निरपराधी	निरपराध
24. अंत्येष्टि	अंत्येष्टि	52. तत्त्वाधान	तत्त्वावधान
25. आशीर्वाद	आशीर्वाद	53. प्रज्ज्वलित	प्रज्वलित
26. उज्ज्वल	उज्ज्वल	54. प्रमाणिक	प्रामाणिक
27. ऐच्छिक	ऐच्छिक	55. पूज्यनीय	पूज्य या पूजनीय
28. इर्ष्या	ईर्ष्या	56. न्यौछावर	न्योछावर

वन्दे मातरम् ।

सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥1॥

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥2॥

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम् । वन्दे मातरम् ॥3॥

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे ।
वन्दे मातरम् ॥4॥

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम् । वन्दे मातरम् ॥5॥

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम् । वन्दे मातरम् ॥6॥